REVELATION 21 SERIES, STUDIES #6 THRU #10, by Chris McCann-Hindi

प्रकाशित वाक्य 21 श्रृंखला, अध्ययन **#6 - #10** क्रिस मॅकन – हिन्दी

Revelation 21 Series, Study #6 by Chris McCann, originally aired , May 29, 2015

प्रकाशित वाक्य 21 श्रृंखला, अध्ययन – 6, क्रिस मॅकन, मूल प्रसारण : 29 मई 2015

नमस्कार! ई–बाईबल सहभागिता के प्रकाशितवाक्य के बाईबल अध्ययन में आपका स्वागत है। प्रकाशितवाक्य अध्याय 21 के अध्ययन में यह अध्ययन क्रमांक 6 है, और हम प्रकाशितवाक्य 21:3–4 पढ़ेंगे :

फिर मैं ने सिंहासन में से किसी को ऊंचे शब्द से यह कहते सुना, कि देख, परमेश्वर का डेरा मनुष्यों के बीच में है; वह उन के साथ डेरा करेगा, और वे उसके लोग होंगे, और परमेश्वर आप उन के साथ रहेगा; और उन का परमेश्वर होगा। और वह उन की आंखोंसे सब आंसू पोंछ डालेगा; और इस के बाद मृत्यु न रहेगी, और न शोक, न विलाप, न पीड़ा रहेगी; पहिली बातें जाती रहीं।

मैं यहाँ पढ़ना बन्द करूंगा। हम वर्तमान में पद 3 पर विचार कर रहे है। परमेश्वर ने पवित्र नगर नये यरूशलेम के स्वर्ग से उतरने की चर्चा की थी और फिर उसने कहा, ''देख परमेश्वर का डेरा मनुष्यों के बीच में है, और वह उनके साथ डेरा करेगा।'' हमने देखा कि परमेश्वर बाईबल के सम्पूर्ण इतिहास में इसी एक बात के लिये कार्य कर रहे थे, जैसा कि वे हमें सिखाते आये है कि यह उसकी योजना थी कि स्वयं के लिये मनुष्यों की सृष्टि करे और उनके बीच (साथ) निवास करे। उसने इस्राएल के साथ यही किया जब उन्हें मिस्र से निकाला वे उसके लोग, एक सामूहिक निकाय बन गये। वे मिस्र के क्रूर दासत्व से छुटकारा पाकर एक देश बने। तब उसने उन्हें निवास स्थान बनाने की आज्ञा दी और जिस प्रकार प्रतिकरूप में वाचा का संदूक निवास स्थान में था, वैसे ही वह उनके बीच में निवास करने लगा। बाद में, परमेश्वर ने राजा दाऊद के द्वारा मन्दिर के निर्माण की तैयारियाँ की और उसके पुत्र सुलैमान ने मन्दिर बनवाया, तब वाचा का संदूक मन्दिर के भीतर रखा गया जो परमेश्वर के उसके लोगों के बीच निवास करने का प्रतीक था। मन्दिर में बलिदान चढ़ाये जाते थे और ये सब बातें उस शिक्षा के केन्द्र में थी कि परमेश्वर अपने लिये एक प्रजा बनायेगा और उनके साथ निवास करेगा।

इस्राएल देश के साथ समस्या यह थी कि वे परमेश्वर के सब चुने हुये लोग नहीं थे, कुछ चुने हुये थे, पर वे बचे हुये थोड़े से लोग थे, परन्तु वह समस्त इतिहास में क्या कर रहा था यह दर्शाने के लिये परमेश्वर ने उस पूरे सामूहिक देह का प्रतीक रूप में उपयोग किया

क्योंकि उसने एक आत्मिक घर या आत्मिक निवास स्थान बनाया जिसका निर्माणकार्य संसार के अंत समय में पूरा होगा, समय के उस बिन्दु पर वह अंतिम व्यक्ति भी उद्धार पा लेगा जिसे उद्धार देना परमेश्वर ने तय कर रखा था। तब उसका (परमेश्वर का) आत्मा उसके चुने हुओं में से प्रत्येक में निवास करेगा और वह उन्हें ''नई पृथ्वी'' के देश में रखेंगा जिसका प्रतिक कनान है, परमेश्वर स्वयं अपनी इस प्रजा के बीच निवास करेगा। उन सबकी संख्या संभवतः बीस करोड़ है, परमेश्वर उनके साथ सदा सर्वदा निवास करेगा।

बाईबल में हम सदा–सर्वदा और 'अनंतकाल' जैसे शब्दों का प्रयोग उस भौतिक देश के संबंध में पाते हैं जिसकी प्रतिज्ञा अब्राहम, इसहाक और याकूब से उनकी 'अनंतकालीन' विरासत के रूप में की गयी थी, और परमेश्वर के संबंध में यह थी कि वह उस (भौतिक) निवासस्थान में सदा–सर्वदा निवास करेगा। परन्तु इनमें से कोई भी प्रतिज्ञा उन प्रतीकों के साथ पूरी नहीं हुई जो इस संसार में थे। मन्दिर नाश कर दिया गया, निवास–स्थान भी नहीं रहा, किसी को पता भी नहीं है कि वाचा के संदूक का क्या हुआ, और जब यह संसार नष्ट किया जायेगा, तब इस्राएल (और यहूदा) देश भी नष्ट कर दिये जायेंगे।

परमेश्वर ने जिन प्रतीक चिन्हों और तस्वीरों का उपयोग किया, उनमें कोई स्थायित्व नहीं था, यह बात इस तथ्य को दर्शाती है कि उनमें एक अधिक गहिरा आत्मिक अर्थ था, जिसका एक बड़ा महत्व था। ये कथन केवल तब ही सत्य है, जब उन्हें आत्मिक रूप में समझा जाये। यहाँ नये आकाश और नयी पृथ्वी का सृजन हैं, जिसमें मसीह में नयी सृष्टि रखी गई है। वे एक नयी देह और आत्मा में है, उनमें पाप नहीं है, और वे उस नयी सृष्टि में रखे गये है जिसमें परमेश्वर अनंतकाल तक उनके साथ निवास करेंगे। बाईबल की सभी प्रतिज्ञाएं उस बिन्दु तक पूरी होगी। जब वर्तमान बुरे और शापग्रस्त संसार का अन्त होगा, और नया संसार सृजा जायेगा, तब परमेश्वर का वचन पूरा होगा। उसने समस्त बाईबल में दी गयी उसकी प्रतिज्ञाओं को मान दिया है, और उनमें से प्रत्येक पूरी की जायेगी। आगे प्रकाशितवाक्य 21:3 के अंत में यह कहा गया है :

फिर मैं ने सिंहासन में से किसी को ऊंचे शब्द से यह कहते सुना, कि देख, परमेश्वर का डेरा मनुष्यों के बीच में है; वह उन के साथ डेरा करेगा, और वे उसके लोग होंगे, और परमेश्वर आप उन के साथ रहेगा; और उन का परमेश्वर होगा।

क्या यह जानी पहिचानी बात नहीं लगती ? परमेश्वर स्वयं उनके साथ होगा और उनका परमेश्वर होगा। हमने पहले कब, कहाँ इसे सुना था ? हमने इसे 'मसीहा की प्रतिज्ञा' के संबंध में सुना था। यीशु मसीह के इस पृथ्वी पर जन्म से लगभग 700 वर्ष पूर्व प्रभु ने यशायाह भविष्यद्वक्ता को उभारा जिसने यशायाह 7:14 में यह लिखा था :

इस कारण प्रभु आप ही तुम को एक चिन्ह देगा। सुनो, एक कुमारी गर्भवती होगी और पुत्र जनेगी, और उसका नाम इम्मानूएल रखेगी।

'इम्मानुएल' एक मिश्रित शब्द है जिसका अर्थ है परमेश्वर हमारे साथ (एल शब्द का अर्थ परमेश्वर है) परमेश्वर ने नये नियम में कुँवारी मरियम से बातचीत के समय इस शब्द को परिभाषित किया है, मत्ती 1:21–23 में लिखा है :

वह पुत्र जनेगी और तू उसका नाम यीशु रखना; क्योंकि वह अपने लोगों का उन के पापों से उद्धार करेगा। यह सब कुछ इसलिये हुआ कि जो वचन प्रभु ने भविष्यद्वक्ता के द्वारा कहा था; वह पूरा हो। कि, देखो एक कुंवारी गर्भवती होगी और एक पुत्र जनेगी और उसका नाम इम्मानुएल रखा जाएगा जिस का अर्थ यह है "परमेश्वर हमारे साथ"।

यीशु प्रतिज्ञा किया गया पुत्र है। परमेश्वर ने प्रतिज्ञाएं दी थी जो मसीह के प्रथम आगमन पर पूरी हुई। यह दर्शाने का एक कारण यह भी था कि परमेश्वर बताना चाहते थे, वे एक विश्वसनीय परमेश्वर है और उनका वचन सत्य एवं विश्वासयोग्य हैं। उसके वचन पर भरोसा किया जा सकता है, और परमेश्वर उनकी प्रतिज्ञाओं का ध्यान रखते है और उन्हें उचित समय और काल में पूरा करते है। इसलिये उन्होंने मसीहा या इम्मानुएल के प्रथम आगमन के संबंध में प्रतिज्ञाएं दी और ईसापूर्व 7 में जो कि एक स्वर्ण वर्ष था, मसीह इस संसार में स्वयं स्वर्ण वर्ष के रूप में आये। वह बन्दियों को छुटकारा देने आये, और उन्होंने वह सब प्रदर्शित किया जो वे संसार की नींव रखे जाने के समय ही सम्पन्न कर चुके थे। परमेश्वर पाठकों का ध्यान फिर से यशायाह की पुस्तक के कथन की ओर खींचते हैं जिसमें कुँवारी के गर्भवती होने, एक पुत्र जनने और उसका नाम 'इम्मानुएल' अर्थात परमेश्वर हमारे साथ, रखे जाने का उल्लेख है। मसीह सनातन परमेश्वर है और जब वह पृथ्वी पर आया और मनुष्यों के बीच रहा तब भी वह सनातन परमेश्वर था। एक अनंत परमेश्वर होकर भी उसने स्वयं को दीन बनाया, और दास का स्वरूप धारण किया, और मनुष्य बनकर मनुष्यों के बीच रहा, वह केवल आरम्भ था। जब वह हमारे बीच था वह मानव रूप में सदेह परमेश्वर था, परन्तु परमेश्वर का अभिप्राय इसी पृथ्वी पर रहने और मनुष्यों के बीच डेरा करने से कहीं बढ़कर था, उनका अभिप्राय था कि वह उसके लोगों के साथ सदा–सर्वदा निवास करे केवल उस अल्पकाल के लिये नहीं जिसे निवासस्थान या वाचा के संदूक के द्वारा प्रतीक रूप में दर्शाया गया था। उन बातों का अंत हुआ परन्तु परमेश्वर की प्रतिज्ञा है कि वह अपने लोगों के साथ युगानुयुग तक निवास करे। मैं फिर पढ़ूंगा – 1 राजा, अध्याय 8, वहाँ परमेश्वर के भवन का निर्माण पूरा होने और वाचा के संदूक को भीतर रखने का वर्णन है। 1 राजा 8:12–13 में लिखा है :

तब सुलैमान कहने लगा, यहोवा ने कहा था, कि मैं घोर अंधकार में वास किए रहूंगा। सचमुच मैं ने तेरे लिये एक वासस्थान, वरन ऐसा दृढ़ स्थान बनाया है, जिस में तू युगानुयुग बना रहे।

युगानुयुग रहने की यह वाचा भी उस भौतिक भवन या मन्दिर के संदर्भ में नहीं थी जिसे सुलैमान ने बनवाया था, परन्तु प्रतीकरूप में 'शांति के पुरूष' प्रभु यीशु मसीह के विषय में थी, जिसका प्रतीक स्वयं सुलैमान था। इफिसियों के अध्याय 2 के अनुसार प्रभु यीशु मसीह सदेह शांति और मेल था। मसीह ने एक घर बनाया (और उसका घर हम है) और उस घर में परमेश्वर युगानुयुग निवास करेंगे। जब यीशु मानव–नस्ल में आये, वह भी परमेश्वर का अपने लिये एक प्रजा बनाने के अभिप्राय का प्रदर्शन था जिन के साथ वे अनंत भविष्यकाल में निवास करेंगे।

प्रकाशितवाक्य 21 की हमारी संदर्भ पद में हम एक अद्‌भुत कथन पाते है – ''देख, परमेश्वर का डेरा मनुष्यों के बीच में है, वह उनके साथ डेरा करेगा, और वे उसके लोग होगे, और परमेश्वर आप उनके साथ रहेगा और उनका परमेश्वर होगा।'' यहाँ 'परमेश्वर हमारे साथ' की प्रतिज्ञा पूरी होती है, या वह प्रतिज्ञा पूरी होती है जिसमें परमेश्वर अपने चुने हुओं के साथ रहते है। और उनमें फिर कभी अलगाव न होगा। यशायाह की पुस्तक के अनुसार पाप हमें परमेश्वर से अलग करता है पर नये आकाश और नयी पृथ्वी में कोई पाप न होगा, इसलिये वहाँ अलगाव कभी नहीं हो सकता। जैसी परमेश्वर की प्रतिज्ञा है, वह हमें कभी नहीं छोड़ेगा, और न कभी त्यागेगा। इब्रानियों 13:4–6 के उस अद्‌भुत कथन का स्मरण करे जो विवाह की चर्चा के आरम्भ में ही है :

विवाह सब में आदर की बात समझी जाए, और बिछौना निष्कलंक रहे; क्योंकि परमेश्वर व्यभिचारियों, और परस्त्रीगामियों का न्याय करेगा। तुम्हारा स्वभाव लोभरिहत हो, और जो तुम्हारे पास है, उसी पर संतोष किया करो; क्योंकि उस ने आप ही कहा है, कि मैं तुझे कभी न छोड़ूंगा, और न कभी तुझे त्यागूंगा। इसलिये हम बेधड़क होकर कहते हैं, कि प्रभु, मेरा सहायक है; मैं न डरूंगा; मनुष्य मेरा क्या कर सकता है॥

प्रकाशितवाक्य 21 में जब परमेश्वर नये आकाश और नयी पृथ्वी को दुल्हिन के समान स्वर्ग से उतरते हुये दर्शाते है, तब क्या आपने उनके संबंध पर ध्यान दिया है ? वह स्वयं दूल्हा है, और वे सब जिनका उद्धार परमेश्वर ने किया है, वे उसकी दुल्हिन है, और वे एक आत्मिक विवाह में एक साथ आ रहे है। यह परमेश्वर और उसके लोग है। उसके पास प्रेम करने और साथ निवास करने के लिये लोग है, और उसके विवाह की वाचा, उसकी दुल्हिन से यह है कि उनके बीच अनंत कालीन एकता और 'एकत्व' होगा, जैसा कि यूहन्ना

के सुसमाचार में दर्शाया गया है कि मसीह, पिता के साथ एक है और हम उस में है। अब वह अपने लोगों में निवास करता है, और वह उनके साथ सदा–सर्वदा के लिये है और किसी भी कारण वश उनमें तलाक नहीं हो सकता है।

आप जानते हैं, कि कलीसियाएँ नहीं जानती कि जब वे झूठी शिक्षाएं और झूठी धर्मशिक्षायें अपने मन से गढ़ते और सिखाते है, तब वे क्या कर रहे है। उन्हें यह अच्छा लगता है और मण्डलियों में उद्धार न पाए हुए लोग पिछले दिनों में उन पर दबाव डालते आये हैं और पिछली शताब्दियों में बहुत सी धर्मशिक्षा संबंधी त्रुटियाँ विकसित हुई है। उन पर (उद्धार न पाए) मनुष्यों द्वारा दबाव डाला गया था। उदाहरण के लिये व्याभिचार के कुछ मामलों में तलाक देने की अनुमति थी। "कौन इसके विरूद्ध बहस कर सकता है ? पत्नी अविश्वासयोग्य रही है, इस कारण केवल ऐसी विशेष परिस्थिति में एक व्यक्ति अपनी पत्नी को तलाक दे सकता है।" यह विचार उनके अंगीकार पर आधारित है, परन्तु इतिहास में लम्बे समय तक बहुत सी कलीसियाएं इस पर अमल नहीं करती थी, क्योंकि परमेश्वर ने उस पर रोक लगाकर रखी थी। किन्तु जब अंत का समय आया, परमेश्वर ने सामुहिक कलीसियाओं को उनकी अपनी भावनाओं और वासनाओं और ऊँचे स्थानों के अनुरूप व्यवहार करने की अनुमति देना आरम्भ कर दिया। तब यह विस्फोट हुआ, किसी भी कारण से तलाक का प्रचलन आम हो गया, और अब तो वे यह विचार भी नहीं करते कि किसी भी कारण से तलाक का प्रावधान नहीं है। यही बाईबल की सच्ची शिक्षा है। जब एक पुरूष और स्त्री विवाह करते है, बाईबल के अनुसार, उनका विवाह तब तक स्थायी है जब तक पति या फिर पत्नी की मृत्यु न हो जाये। वे परमेश्वर के द्वारा जोड़े गये है, और मसीह ने कहा था, ''जिन्हें परमेश्वर ने जोड़ा है, मनुष्य उनको अलग न करे।'' मनुष्य जो कुछ भी करते है वह मानों ऐसा है कि यह बात उनके मनों में स्पष्ट नहीं है ? व्याभिचार के कारण या फिर किसी ऐसी–वैसी बात के कारण मनुष्य अलग होते है। मनुष्य परमेश्वर की व्यवस्था को नहीं सुनते यह मनुष्य का स्वभाव है कि परमेश्वर की आज्ञाओं के विरूद्ध बलवा करे, परन्तु परमेश्वर की आज्ञायें सिद्ध रूप में स्पष्ट है और उनमें कहीं विवाह–विच्छेद नहीं है।

परमेश्वर स्वयं अपनी व्यवस्था से बंधा है और परमेश्वर की व्यवस्था के अनुसार यह वाचा तोड़ी, बिगाड़ी या बदली नहीं जा सकती। परमेश्वर की व्यवस्था मादियों और फारसियों की व्यवस्था से कहीं श्रेष्ठतर है, उदाहरण के रूप में देखिये कि मादियों और फारसियों के बीच उनके राजा द्वारा दी गई व्यवस्था का बड़ा सम्मान था। यदि उनके राजा कोई नियम बनाते तो उसे माना जाना अनिवार्य था, परन्तु परमेश्वर की व्यवस्था, मनुष्यों की व्यवस्था से कहीं बढ़कर महत्वपूर्ण है, और परमेश्वर अपनी व्यवस्था का पूरी तरह पालन करते है और वे उनका उलंघन नहीं करेंगे। यदि वे अपनी व्यवस्था का उलंघन करेगे तो निश्चत

ही वह पाप होगा, और बाईबल बताती है कि परमेश्वर पाप नहीं कर सकते। परमेश्वर के लिये झूठ बोलना या अन्य कोई बुरा काम करना असंभव है, और बुरा काम उनकी व्यवस्था का उलंघन है। और परमेश्वर की व्यवस्था कहती है कि पति को उसकी पत्नी से प्रेम करना चाहिये, एक बार विवाह करने के बाद वह मृत्यु तक विवाहित है।

जब हम नये आकाश और नयी पृथ्वी में जाएंगे, तब दूल्हा अपनी दुल्हिन अर्थात् विश्वासियों की देह से मिलेगा। ये वे लोग है जिन्हें परमेश्वर ने उद्धार दिया है, वे धोये गये है और शुद्ध एवं श्वेत बनाए गए है और मलमल का महीन श्वेतवस्त्र धारण किये है, जो संतों की धार्मिकता है। अब वे सबके सब एक देह में जोड़े गये है और उनकी एकता कभी तोड़ी नहीं जा सकती। यदि पाप होगा तो क्या होगा ? परमेश्वर कहते है उनमें कभी तलाक नहीं होगा या वे कभी अलग–अलग नहीं रहेंगे। ''मैं तुम्हें कभी न छोडूंगा और न कभी त्यागूंगा।'' यह परमेश्वर की विवाह की शपथ है, और निश्चय ही वहाँ पाप न होगा, क्योंकि पाप उस वाचा को तोड़ देगा और मृत्यु लाएगा। किन्तु वहाँ मृत्यु नहीं है क्योंकि विवाह अनंतकालीन और सिद्ध है। यहाँ परमेश्वर एवं उसकी प्रजा को एक विशेष एवं सर्वश्रेष्ठ घनिष्ट संबंधों में जोड़ा गया है। हमारी संदर्भ पद में क्या कहा गया है ? – ''वह उनके साथ डेरा करेगा, और वे उसके लोग होंगे, और परमेश्वर आप उनके साथ रहेगा और उनका परमेश्वर होगा।''

Revelation 21 Series, Study #7 by Chris McCann, originally aired , June 1 , 2015

प्रकाशित वाक्य 21 श्रृंखला, अध्ययन – 7, क्रिस मॅकन, मूल प्रसारण : 1 जून 2015

नमस्कार! ई–बाईबल सहभागिता के प्रकाशितवाक्य के बाईबल अध्ययन में आपका स्वागत है। प्रकाशितवाक्य अध्याय 21 के अध्ययन में यह अध्ययन क्रमांक 7 है, और हम प्रकाशितवाक्य 21:4–5 पढ़ेंगे :

और वह उन की आंखोंसे सब आंसू पोंछ डालेगा; और इस के बाद मृत्यु न रहेगी, और न शोक, न विलाप, न पीड़ा रहेगी; पहिली बातें जाती रहीं। और जो सिंहासन पर बैठा था, उस ने कहा, कि देख, मैं सब कुछ नया कर देता हूं: फिर उस ने कहा, कि लिख ले, क्योंकि ये वचन विश्वास के योग्य और सत्य हैं।

हम पिछले दो अध्ययनों से पद 3 पर विचार कर रहे थे, वहाँ परमेश्वर ने अपनी प्रजा के साथ निवास करने की चर्चा की है। हमने देखा कि यह बाईबल की प्रतिज्ञाओं का पूरा

होना है, जिनमें कहाँ गया है कि परमेश्वर (इम्मानुएल या परमेश्वर हमारे साथ) अपनी प्रजा के साथ सदा–सर्वदा निवास करेगा।

फिर मैं ने सिंहासन में से किसी को ऊंचे शब्द से यह कहते सुना, कि देख, परमेश्वर का डेरा मनुष्यों के बीच में है; वह उन के साथ डेरा करेगा, और वे उसके लोग होंगे, और परमेश्वर आप उन के साथ रहेगा; और उन का परमेश्वर होगा।

तब आगे पद 4 में हम बाईबल की सबसे अधिक राहत देने वाली पदों में से एक पद पाते हैं, क्योंकि वहाँ लिखा है :

और वह उन की आंखोंसे सब आंसू पोंछ डालेगा; और इस के बाद मृत्यु न रहेगी, और न शोक, न विलाप, न पीड़ा रहेगी; पहिली बातें जाती रहीं।

जब हम इस संसार के दु:खों का विचार करते हैं और उन तकलीफों एवं निराशाओं के विषय में सोचते है, जो लोग प्रतिदिन अनुभव करते हैं, हम समझ सकते है कि पवित्रशास्त्र का यह पद कितनी बड़ी आशीष है। अभी पिछले कुछ सप्ताहों में मैंने स्वयं तीन व्यक्तियों के बारे में सुना, जिन्हें मैं और दूसरे लोग भी जानते थे, कि उनकी मृत्यु हो गई और उनमें से कुछ सच्चे विश्वासी जन थे। जब विश्वासी जन मरते हैं तब हम अविश्वासी के मृत्यु से अलग हटकर सोचते है। हमारी सोच बहुत अधिक सकारात्मक होती है, वास्तव में पिछले कुछ सप्ताहों में हत्याएं, बम–विस्फोट के कारण मौंते, ट्रेन के पटरी से उतर जाने के कारण और बाढ़ के कारण मौंते, हमारे देश में और समुद्रपारीय देशों में मौंते हुई, और आतंकवाद से होने वाली मौतें तो छोड ही दिजिए। संसार के सभी देशों में ये बातें हर दिन होती ही रहती है। लोग मर रहे हैं और परिजन एवं मित्र कितने आँसू बहाते है। इस संसार में बहुत दुख है और हम में से प्रत्येक जानते हैं कि कल और परसो भी यही सब होगा। जब तक संसार है, मृत्यु होती रहेगी – विलाप, दुख और पीड़ा बनी रहेगी। यह इस संसार के जीवन का एक अभिन्न अंग है।

ऐसा क्यों है ? क्यों संसार में हर कहीं इतना गहिरा दुख है ? यह सच है कि आधुनिक स्वाभाविक मनुष्य बाईबल का उत्तर सुनना नहीं चाहते, परन्तु यही वस्तुस्थिति है : संसार में होने वाली सभी भयानक बातें जो मनुष्य जाति को अत्याधिक दुख देती है, वे मनुष्य के पाप का परिणाम है। आरम्भ से ही यही होता आया है, जब आदम और हव्वा ने पाप किया और परमेश्वर ने संसार को शाप दिया था। स्मरण करे कि परमेश्वर ने आदम–हव्वा के पाप करने के बाद क्या कहा था, उत्पत्ति 3:16–19 में लिखा है :

फिर स्त्री से उसने कहा, मैं तेरी पीड़ा और तेरे गर्भवती होने के दुःख को बहुत बढ़ाऊंगा; तू पीड़ित हो कर बालक उत्पन्न करेगी; और तेरी लालसा तेरे पति की ओर होगी, और वह तुझ पर प्रभुता करेगा। और आदम से उसने कहा, तू ने जो अपनी पत्नी की बात सुनी, और जिस वृक्ष के फल के विषय मैं ने तुझे आज्ञा दी थी कि तू उसे न खाना उसको तू ने खाया है, इसलिये भूमि तेरे कारण शापित है: तू उसकी उपज जीवन भर दुःख के साथ खाया करेगा: और वह तेरे लिये कांटे और ऊंटकटारे उगाएगी, और तू खेत की उपज खाएगा ; और अपने माथे के पसीने की रोटी खाया करेगा, और अन्त में मिट्टी में मिल जाएगा; क्योंकि तू उसी में से निकाला गया है, तू मिट्टी तो है और मिट्टी ही में फिर मिल जाएगा।

परमेश्वर कह रहे हैं कि मनुष्य भूमि की मिट्टी से बना था और वह मृत्यु होने पर उसी मिट्टी में मिल जायेगा। इन कुछ पदों में परमेश्वर कह रहे है कि मनुष्य दुख और मृत्यु का अनुभव करेगा, अकसर यह मृत्यु ही है जो परिवार में या घरानों में ऐसे भयानक दुःख को लाती है। हम जीवन जीते है और कुछ समय खुश भी रहते हैं। हम एक नयी पत्नी या नया पति पाते हैं, फिर संतानें उत्पन्न होने लगती है, हम अपना परिवार बनाते है और सब कुछ अच्छा लगता है। हमारे और हमारी संतानों के लिये हम सभी प्रकार की सुखद आशाएं करते है कुछ लोगों के लिये अन्य लोगों की अपेक्षा कुछ देर के बाद परन्तु अंत में वह आती है – अन्ततः मृत्यु सभी के परिवारों में आयेगी, हो सकता है, पहले आपके अपने परिवार में न आये, पर दादा–दादी और नाना–नानी होते हैं, और एक दिन आता है जब हम आँसुओं और क्रंदन के साथ धीमें शब्दों में सुनते है – ''दादी नहीं रही'' या ''दादा नहीं रहे'' या पिता की मृत्यु हो गई या माता की, और उससे भी बुरी बात यह कि बच्चों में से किसी की मृत्यु हो जाए। मृत्यु उनके घर आ चुकी है और अब वहाँ रोना, पीटना हृदय में गहिरा दुख और पीड़ा है। अब परिवार एवं लोग बदल जाते हैं परन्तु कुछ समय बाद हम फिर जीवन में चल पड़ते है, पर कहाँ चल पड़ते हैं ? हम अगले अवसर की ओर चल पड़ते है जब परिवार में मृत्यु आयेगी। मुझे आपके बारे में कुछ जानने की आवश्यकता नहीं कि आपके साथ यह होगा, और यह मेरे साथ भी होगा। यह मनुष्यों की नियति है। हम मृत्यु के कारण आँसुओं, रूदन, दुःख और पीड़ा की अपेक्षा कर सकते है। मृत्यु हम में से प्रत्येक के जीवन में आयेगी।

हम जानते हैं कि आदम और हव्वा 'उत्तम दशा' में सृजे गये थे और वे सदा सर्वदा जीवित रहते, परन्तु उन्होंने पाप किया। परमेश्वर ने उनकों चेतावनी दी थी कि जिस दिन वे उस वर्जित फल को खाएंगे, मर जायेंगे। आदम हमारी तस्वीर है और वह हम सबका प्रतिनिधित्व करता था। हम सब उसकी देह में थे और इसलिये हम उस अकेले को दोष नहीं दे सकते। हम सब भी वही करते, और वास्तव में हम सब ने परमेश्वर की अवज्ञा की है। आदम आत्मिक रूप में उसी दिन मर गया और अंत में 930 वर्षों के बाद उस पर

शारीरिक मृत्यु आयी। यह समस्त मानव जाति के साथ हुआ है। हम याकूब 1:14–15 में पढ़ते है :

परन्तु प्रत्येक व्यक्ति अपनी ही अभिलाषा में खिंच कर, और फंस कर परीक्षा में पड़ता है। फिर अभिलाषा गर्भवती होकर पाप को जनती है और पाप जब बढ़ जाता है तो मृत्यु को उत्पन्न करता है।

यहाँ परमेश्वर प्रक्रिया की व्याख्या करते है। हम हव्वा के बारे में पढ़ते हैं कि उसने फल को देखा – उसने देखा कि यह फल बुद्धिमान बनाने वाला है, चाहने योग्य है, और दिखने में मनोहर है, उसने फल खाने की लालसा की। तब पाप आया और पाप के बाद क्या आया ? ''पाप जब बढ़ जाता है'' वह ''मृत्यु को उत्पन्न करता है''। यही वह प्रक्रिया है जो हम सबके जीवन में होती है।

क्या इस संसार में बहुत अधिक मृत्यु है ? हाँ, हर तरफ मृत्यु है, है ना ? इस पृथ्वी पर हजारों हजार लोग हैं जो किसी न किसी कारण से मर रहे है, चाहे वह मनुष्य की मनुष्य के प्रति अमानवीयता हो, जैसे युद्ध, आतंकवाद, हत्याएँ और प्राकृतिक बीमारियों के कारण मृत्यु, हम बीमारियों को स्वाभाविक मानते है परन्तु वे सृष्टि को दिये गये शाप का परिणाम है। लोगों को ट्यूमर, कैंसर और हृदयघात होते है और परिणाम स्वरूप लोगों की मृत्यु हो जाती है। मृत्यु सब ओर है, इसका अर्थ है पाप सब ओर है, क्योंकि मृत्यु अपने आप से नहीं आती, वह अभिलाषा से आरम्भ होती है और पाप की ओर ले चलती है और पाप जब बढ़ जाता है, मृत्यु को उत्पन्न करता है, इस प्रकार मृत्यु वास्तव में पाप का परिणाम है।

हम अपने चारों ओर संसार में देख सकते है कि समस्त पृथ्वी पर पाप कितना अधिक बढ़ गया है। अधर्म और अपराध बढ़ रहे हैं और मनुष्य का हृदय ठंडा होता जा रहा है, जिसका अर्थ है अधिक मौतें। और भी अधिक संख्या में मौते होगी। मनुष्य सदा ही उसके पाप के प्रति रोमांचित और उसका पीछा करने तत्पर रहता है। यह आँखों की अभिलाषा और जीविका का घमण्ड है जो उसे रोमांचित करता है। उदाहरण के रूप में समलिंगी विवाह को ले। लाखों–लाख पाप है जो मनुष्य करते हैं परन्तु यह ऐसा पाप है जिसके लिये लोग रोमांचित है। वे कहते है – ''यह अच्छी बात है''। परन्तु उसका परिणाम क्या होगा ? परिणाम केवल मृत्यु है, जैसा कि अन्य सभी पापों का फल मृत्यु है। बाईबल कहती है – ''और जब पाप बढ़ जाता है, मृत्यु को उत्पन्न करता है।'' लोग धन की लालसा करते और इस संसार में धन का ढ़ेर लगाते है और परमेश्वर के बारे में नहीं सोचते। यह सब पाप है। अंत में क्या वे अपने धन का आनन्द ले सकेंगे ? नहीं, वे मरने वाले है और उनका धन दूसरों को दे दिया जायेगा। कोई भी व्यक्ति किसी भी पाप का आनन्द इस

संसार की सीमाओं के बाहर नहीं ले पायेगा, वे सब मरेंगे और उनका अस्तित्व मिट जाएगा।

रोमियों के अध्याय 6 में परमेश्वर पाप की मजदूरी के विषय में कहते है – रोमियों 6:23 में वे यह कहते है :

क्योंकि पाप की मजदूरी तो मृत्यु है,

एक बार फिर कहूँ, पाप मृत्यु की ओर लेकर जाता है। यशायाह के 25 अध्याय में परमेश्वर मनुष्य जाति के लिये एक अद्‌भुत और प्रेरणास्पद पद लिखते है। पाप के परिणामों के वर्णन के बीच में यह एक सुन्दर कथन है, मनुष्यों ने स्वयं को बुद्धिमान माना और मृत्यु, दुःख, आँसू और दुर्दशा अपने लिये मोल ले ली। परन्तु परमेश्वर के विरूद्ध बलवा करने के कारण संसार की इस बुरी दुर्दशा में परमेश्वर यशायाह 25:6–8 में अपने लोगों को आशा प्रदान करते है :

सेनाओं का यहोवा इसी पर्वत पर सब देशों के लोगों के लिये ऐसी जेवनार करेगा जिस में भांति भांति का चिकना भोजन और निथरा हुआ दाखमधु होगा; उत्तम से उत्तम चिकना भोजन और बहुत ही निथरा हुआ दाखमधु होगा। और जो पर्दा सब देशों के लोगों पर पड़ा है, जो घूंघट सब अन्यजातियों पर लटका हुआ है, उसे वह इसी पर्वत पर नाश करेगा। वह मृत्यु को सदा के लिये नाश करेगा, और प्रभु यहोवा सभों के मुख पर से आंसू पोंछ डालेगा, और अपनी प्रजा की नामधराई सारी पृथ्वी पर से दूर करेगा; क्योंकि यहोवा ने ऐसा कहा है॥

यहाँ हम देखते है कि 'आँसुओं को पोछने के लिये' परमेश्वर को मृत्यु का समाधान करना होगा। आप ऐसे संसार की आशा नहीं कर सकते जिसमें लोग मर रहे हो और आप सोचे कि आँसू, पीड़ा और क्लेश नहीं होगे, दोनों बातें साथ–साथ होती है। जहाँ मृत्यु है, वहाँ आँसू है। नये आकाश और नयी पृथ्वी में पुरानी बातें बीत चुकी है, यह संसार मिट चुका है, और परमेश्वर यहाँ यशायाह की संदर्भ पद में और प्रकाशित वाक्य 21:4 में हमें बताते है, ''वह उनकी आँखों से सब आँसू पोंछ देगा और उसके बाद मृत्यु न रहेगी।'' आपने देखा कि परमेश्वर ने कैसे इन दो विचारों को एक बनाया ? नये आकाश और नयी पृथ्वी में अनंतकालीन जीवन है, इसलिये वहाँ मृत्यु नहीं होगी और इसलिये वहाँ आँसू और हृदय के दुख नहीं होंगे। यह एक अद्‌भुत अकल्पनीय बात है। परमेश्वर के लोग उसकी नयी सृष्टि में लाये जायेंगे, और वहाँ परमेश्वर और चुने हुओं की सम्पूर्ण मण्डली होगी जिनके नाम मेम्ने की जीवन की पुस्तक में लिखे होंगे, और वे सब परमेश्वर के पुत्र और भाई बनकर वहाँ रहेंगे और वहाँ परमेश्वर का प्रेम और भाइयों के प्रति प्रेम होगा।

यह वास्तव में परमेश्वर का परिवार होगा, एक बहुत बड़ा परिवार, उसके सदस्यों की संख्या 20 करोड़ होगी और उन सबके पास नयी पुनरूत्थान प्राप्त देहें होगी और नये आकाश और नयी पृथ्वी में उन सबको अनंत जीवन मिलेगा। वे अनंतकाल तक सर्वदा जीवित रहेंगे और कभी ऐसा अवसर नहीं आयेगा, जब किसी दिन जागने पर (चिरपरिचित भाषा में) कोई उनसे कहेगा, ''भाई अमुक–अमुक व्यक्ति अब हमारे बीच नहीं रहा, या बहिन अमुक–अमुक व्यक्ति अब हमारे बीच नहीं रहा।'' निश्चय स्वर्ग में स्त्री और पुरूष नहीं होंगे, जब हम उस अनंतकालीन महिमामय भविष्य की व्याख्या करते हैं तब इस संसार की भाषा में से कुछ बातें लिये बिना वर्णन करना आसान नहीं है। बाईबल में परमेश्वर भी यही करते है। परन्तु यह कभी नहीं होगा कि वहाँ किसी की मृत्यु हो जाये।

यदि हम से कहा जाये कि किसी की मृत्यु हो गई है, तो क्या होगा ? इसका अर्थ होगा कि हम दुख मनाये और विलाप करे। स्मरण करे कि प्रेरितों की पुस्तक में वे डोरकास के लिये किस प्रकार रोये थे ? उन्होंने विलाप किया क्योंकि उसने बहुत से अच्छे काम किये थे। सच्चे विश्वासीजन अन्य विश्वासियों की मृत्यु हो जाने पर रोते हैं, परन्तु नये आकाश और नयी पृथ्वी में आँसू नहीं होंगे क्योंकि मृत्यु नहीं होगी। इस कारण वहाँ विलाप, दुख या क्लेश नहीं होंगे। वहाँ ऐसी घटनाएं नहीं होगी कि आप जिससे प्रेम करते है उसके विषय में यह सुनने मिले कि वह व्यक्ति अब नहीं रहे और आपका हृदय टूट जाये यह सोचकर कि अब आप उन्हें कभी देख नहीं सकेंगे या उनसे बातचीत नहीं कर सकेगे। परमेश्वर कह रहे हैं कि वहाँ मृत्यु नहीं होगी। यह मृत्यु इस संसार में शाप का परिणाम थी और वह पाप का दण्ड है। पाप बुरा है और उसने इस संसार में मृत्यु को ला दिया है परन्तु परमेश्वर ने पाप से संबंधित बातों का समाधान किया है और पाप की मजदूरी यीशु मसीह के द्वारा अदा कर दी है, उसके उस काम के द्वारा जो उसने पृथ्वी की नेव से पहले ही पूरा कर दिया था। वह अपने लोगों के लिये मरा, ताकि उन्हें मरना न पड़े, और वे सदा–सर्वदा जीवित रहने के लिये स्वतंत्र कर दिये गये। और वे जीएंगे और जीएंगे, अनंतकाल तक और फिर मृत्यु न होगी।

लोग सोच में पड जाते है, ''आप परमेश्वर के आने वाले दिन और संसार के अंत के विषय भली बातों की आशा क्यों करते है ?'' किस बात का वास्तव में अंत होने वाला है ? उन्होंने कभी सोचा नहीं कि परमेश्वर की संतानों के लिये इन बातों का क्या अर्थ है, क्योंकि वे इस संसार से इतने लिपटे हुये है और इस संसार से बहुत प्रेम करते है। मुझे निश्चय है कि हम में से बहुत लोग आश्चर्य करते है कि वे इस संसार से इतना अधिक प्रेम क्यों करते है ? यह संसार आँसुओं और दुखों से भरा है, यहाँ रोना, पीड़ा मृत्यु और अन्याय है। दिन–प्रतिदिन किसी न किसी स्थान में कोई दुख, क्लेश या विपत्ति आती है, और इसमें अधिक समय नहीं लगता जब यह दुख मेरे या आपके घर के आसपास पहुँच

जाता है। हम ऐसे दिन की कल्पना करके डरते हुये अपना जीवन जीते हैं। स्मरण कीजिये कि अय्यूब की पुस्तक में अय्यूब ने क्या कहा ? उसने कहा ''क्योंकि जिस डरावनी बात से मैं डरता हूँ, वही मुझ पर आ पड़ती है, और जिस बात से मैं भय खाता हूँ, वही मुझ पर आ जाती है।'' वह उसके घर पर आयी, उसके सभी बेटे–बेटियाँ मर गये और उसने सबकुछ खो दिया। यह केवल एक खास समय की बात थी, थी ना ? उसके 10 बच्चे अवश्य मरते परन्तु भयानक बात यह थी कि यह एक असामान्य तरीके से हुआ, उसकी 10 संतानें एक ही समय में मर गई परन्तु वास्तविकता यह है कि यही सब परिवारों में होती है चाहे जल्दी हो या विलम्ब से हो।

यही कारण है कि परमेश्वर की संतान एक बेहतर संसार की, एक नया आकाश और नयी पृथ्वी की अपेक्षा करती है, जिसमें अनंत जीवन की अद्‌भुत आशा और अपेक्षाएं है।

Revelation 21 Series, Study #8 by Chris McCann, originally aired , June 2 , 2015

प्रकाशित वाक्य 21 श्रृंखला, अध्ययन – 8, क्रिस मॅकन, मूल प्रसारण : 2 जून 2015

नमस्कार! ई–बाईबल सहभागिता के प्रकाशितवाक्य के बाईबल अध्ययन में आपका स्वागत है। प्रकाशितवाक्य अध्याय 21 के अध्ययन में यह अध्ययन क्रमांक 8 है, और हम प्रकाशितवाक्य 21:4–5 पढ़ेंगे :

और वह उन की आंखोंसे सब आंसू पोंछ डालेगा; और इस के बाद मृत्यु न रहेगी, और न शोक, न विलाप, न पीड़ा रहेगी; पहिली बातें जाती रहीं। और जो सिंहासन पर बैठा था, उस ने कहा, कि देख, मैं सब कुछ नया कर देता हूं: फिर उस ने कहा, कि लिख ले, क्योंकि ये वचन विश्वास के योग्य और सत्य हैं।

हम पिछली बार पद 4 पर विचार कर रहे थे। पुनः यह एक अद्‌भुत पद है जो परमेश्वर ने अपने वचन में दी है, अर्थात् बाईबल में, और यह बड़ी राहत देने वाली और आशा से भरी है। परमेश्वर सभी पीढ़ियों की अपनी प्रजा से कह रहे है, पर विशेषकर वर्तमान पीढ़ी से, जिन्होंने महाक्लेश और न्याय के दिन के दुख भरे कालखण्ड में जीवन जिया है। संसार दुष्टता में बढ़ गया है और बुराई चारो ओर फैलती ही जा रही है, धर्मियो की आत्माएं दिन–प्रतिदिन उनके चारो ओर अराजकता और अधर्म के कामों के कारण दुखी होती रहती है। और परमेश्वर की संतानें अपने भीतर अपनी देह के कारण भी दुखी है, इसलिये संसार में बहुत अधिक दुख, क्लेश और सताव है। इसलिये जब हम इस प्रकार के पद पवित्रशास्त्र में पढ़ते है, जहाँ परमेश्वर ऐसे दिन की ओर संकेत करते हैं जहाँ ये सभी बातें बीत जाएगी

और सदा के लिये समाप्त हो जायेगी, तब बड़ा प्रोत्साहन मिलता है। परमेश्वर कहते है – ''वे उनकी आँखों से सब आँसू पोछ देंगे।'' और यहाँ इस बात पर जोर दिया गया है, क्योंकि वे कहते है – ''इसके बाद मृत्यु न रहेगी, और न शोक न विलाप, न पीड़ा रहेगी।''

यह बड़ी रोचक बात है, जब हम बाईबल में शब्द 'आँसुओं' पर विचार करते है, बाईबल में हम मुख्य रूप में इसका संबंध परमेश्वर के लोगों से पाते है। हम इस शब्द को उद्धार न पाये लोगों के संबंध में बहुत अधिक उपयोग में आया हुआ नहीं पाते। एक ही अपवाद है जो इब्रानियों 12:16–17 में पाया जाता है :

ऐसा न हो, कि कोई जन व्यभिचारी, कष्ट ऐसाव की नाईं अधर्मी हो, जिस न एक बार के भोजन के बदले अपने पहिलौठे होने का पद बेच डाला। तुम जानते तो हो, कि बाद को जब उस ने आशीष पानी चाही, तो अयोग्य गिना गया, और आंसू बहा बहाकर खोजने पर भी मन फिराव का अवसर उसे न मिला॥

यह बाईबल के कुछेक ऐसे स्थानों में से एक है जहाँ किसी उद्धार न पाए व्यक्ति (एसाव के समान) को आँसू बहाते हुये बताया गया है। इसमें रोचक बात यह है कि वह आँसू बहाता है जबकि आशीषें पहले ही दी जा चुकी है। तब एसाव आशीषें मांगता है और वह वही कर रहा है जो उसे पहले ही करना चाहिये था, और यदि वह पहले आशीषों के दिये जाने के पहले यह करता तो अच्छी बात होती, परन्तु वह तब कर रहा था जब तथ्य यह है कि देर हो चुकी थी। इस कारण समय निकलने के बाद आँसू बहाना कोई अच्छी बात नहीं है।

ध्यान दीजिये कि बाईबल आँसुओं के बारे में क्या कहती है, हम बहुत सी पदें पढ़ेंगे, सबसे पहले भजन संहिता 6 जिसमें परमेश्वर ताड़ना और डाँट–फटकार के विषय में कहते है, और जिसका संबंध विश्वासियों के पाप करने से है। भजन संहिता 6:5–6 में यह लिखा है:

क्योंकि मृत्यु के बाद तेरा स्मरण नहीं होता; अधोलोक में कौन तेरा धन्यवाद करेगा? मैं कराहते कराहते थक गया; मैं अपनी खाट आंसुओं से भिगोता हूं; प्रति रात मेरा बिछौना भीगता है।

संदर्भ से हम समझते हैं कि इसका संबंध किसी ऐसे व्यक्ति से है जो पाप के परिणाम स्वरूप कठिनाई में है। वे शरीर और आत्मा के बीच होने वाले संघर्ष के कारण दुःखी है।

भजन संहिता 42:3 में यह भी लिखा है :

मेरे आंसू दिन और रात मेरा आहार हुए हैं; और लोग दिन भर मुझ से कहते रहते हैं, तेरा परमेश्वर कहां है?

यहाँ एक सच्चे विश्वासी का संदर्भ है जो परमेश्वर की खोज में है। पिछली पद में कहा गया है कि वह परमेश्वर का प्यासा था, परन्तु फिर भी उसके आँसू रात–दिन उसका आहार बने है।

भजन 126:5–6 में यह लिखा है :

जो आंसू बहाते हुए बोते हैं, वे जयजयकार करते हुए लवने पाएंगे। चाहे बोने वाला बीज ले कर रोता हुआ चला जाए, परन्तु वह फिर पूलियां लिए जयजयकार करता हुआ निश्चय लौट आएगा॥

इन पदों में परमेश्वर 'सुसमाचार का बीज' बोने और आँसू बहाने के बीच सम्बन्ध बता रहे है। परमेश्वर के वचन का प्रचार–प्रसार करना एक दुख भरा काम है जो उद्धार न पाने वालों के लिये मृत्यु के निकट, मृत्यु की गंध के समान है। उद्धार के दिन हम आँसू बहा सकते है, जब हमने परमेश्वर के वचन को सुनाया, उन्हें जो अन्धकार में थे, क्योंकि अधिकतर लोग उसी दशा में बने रहेंगे। निश्चय ही हमारी आशा थी कि जब बीज बोया जा रहा था तब उसके पाने वालों के बीच अवश्य ही परमेश्वर के कुछ चुने हुये लोग भी होगे।

यिर्मयाह 9:1 में यह लिखा है :

भला होता, कि मेरा सिर जल ही जल, और मेरी आंखें आँसुओं का सोता होतीं, कि मैं रात दिन अपने मारे हुए लोगों के लिये रोता रहता।

हम जानते है कि यिर्मयाह को 'रोने वाला भविष्यद्वक्ता' कहा जाता है क्योंकि वह यहूदा के लोगों के लिये परमेश्वर की ओर से बड़ा दुखभरा समाचार लेकर आया। वे सब परमेश्वर के न्याय–दण्ड के आधीन थे क्योंकि परमेश्वर अपने लोगों का न्याय कर रहा था। यिर्मयाह 13:17 में यह लिखा है :

और यदि तुम इसे न सुनो, तो मैं अकेले में तुम्हारे गर्व के कारण रोऊंगा, और मेरी आंखों से आंसुओं की धारा बहती रहेगी, क्योंकि यहोवा की भेड़ें बंधुआ कर ली गई हैं।

उसके बाद, यिर्मयाह 14:17 में यह लिखा है :

तू उन से यह बात कह, मेरी आँखों से दिन रात आंसू लगातार बहते रहें, वे न रुकें क्योंकि मेरे लोगों की कुंवारी बेटी बहुत ही कुचली गई और घायल हुई है।

आँसू बहाये गये क्योंकि परमेश्वर का क्रोध यहूदा की प्रजा पर भड़का था, यह महाक्लेश के दिनों में सामुहिक कलीसियाओं पर परमेश्वर के न्याय का प्रतीक है। परमेश्वर के लोगों ने इस बारे में सीखा जब प्रभु ने (अंत के दिनों में) अपने वचन की मुहर को खोला और ज्ञान बहुत बढ़ गया। अ ंके समय में जिवीत परमेश्वर के लोग यह समजने लगे कि कलीसियाई युग का अंत हो चुका है और परमेश्वर उन्हें आज्ञा दे रहा है कि वे कलीसियाओं से बाहर निकले। वे सब जो अविश्वायोग्य थे वे जंगली बीज थे जिन्हें बण्डल बांधकर जलाया जाऐगा। यह बड़ी दुखभरी जानकारी है। इसलिये प्रभु इसका संबंध विलाप करने से और दिन रात आँसुओं को बहाने से जोड़ते है। परमेश्वर के लोगों को ये बातें उन्हें बतानी है जो पहले उनके भाई–बन्धु थे जो स्वयं को मसीही कहते थे, वहाँ बड़ा दुख होगा क्योंकि अधिकतर लोगों ने नहीं सुना और वे कलीसियाओं के बाहर नही आए।

नये नियम में प्रेरित पौलुस ने प्रेरितों के काम 20:19 में लिखा है :

अर्थात बड़ी दीनता से, और आंसू बहा बहाकर, और उन परीक्षाओं में जो यहूदियों के षडयन्त्र के कारण मुझ पर आ पड़ी; मैं प्रभु की सेवा करता ही रहा।

आगे इसी अध्याय में प्ररितों के काम 20:26–28 में लिखा है :

इसलिये मैं आज के दिन तुम से गवाही देकर कहता हूं, कि मैं सब के लोहू से निर्दोष हूं। क्योंकि मैं परमेश्वर की सारी मनसा को तुम्हें पूरी रीति से बनाने से न झिझका। इसलिये अपनी और पूरे झुंड की चौकसी करो; जिस से पवित्र आत्मा ने तुम्हें अध्यक्ष ठहराया है; कि तुम परमेश्वर की कलीसिया की रखवाली करो, जिसे उस ने अपने लोहू से मोल लिया है।

तब वे प्रेरितों के काम 20:31 में लिखते है :

इसलिये जागते रहो; और स्मरण करो; कि मैं ने तीन वर्ष तक रात दिन आंसू बहा बहा कर, हर एक को चितौनी देना न छोड़ा।

इस कथन के द्वारा प्रेरित पौलुस 'जागते रहने' और 'चेतावनी देने' के बीच संबंध बता रहे हैं, परमेश्वर ने यहेजकेल के 33 अध्याय में पहरेदार के संबंध में भी यहीं बात कही है। जब पहरेदार तलवार को आते देखता है उसकी जिम्मेवारी है कि तुरही फूंके और लोगों को सावधान करे। इसलिये बाईबल पहरेदार के जागते रहने और आँसुओं के साथ लोगों को चेतावनी देने के काम को जोड़ती है। यह बात सुसमाचार प्रचार और आँसू बहाने के बीच

भी संबंध बनाती है, जब हम (परमेश्वर के वचन) आँसुओं के साथ बोते हैं, और लवने के समय पूलियाँ लिये जय–जयकार करते हुये लौटते है। इस प्रकार सुसमाचार प्रचार करने का समस्त कालखण्ड विलाप करने या आँसू बहाने के समान है।

निःसंदेह, प्रकाशितवाक्य 21 में न्याय के दिन का अंत होता है और 21 मई 2011 को न्यायके दिन के प्रारंभ में परमेश्वर ने सुसमाचार के प्रचार–प्रसार का अंत किया था, उसके सबसे अंतिम दिन आकाश और पृथ्वी लोप हो जाएंगे। परमेश्वर के लोग परमेश्वर के द्वारा सुसमाचार प्रचार करने में उपयोग किये गये। परमेश्वर ने चुने हुओं को 'इच्छा' और 'सामर्थ' दी ताकि वे सुसमाचार प्रचार के द्वारा परमेश्वर की सुइच्छा को पूरा करे, और हम मसीह के बदले, परमेश्वर के राजदूत बनकर दूसरों को परमेश्वर से मेल–मिलाप करने का निवेदन करते थे। यह लोगों से अनुरोध करने के समान था, ''परमेश्वर के पास जाओ, जब तक वह मिल सकता है।''

जी हाँ, यह उद्धार के दिनों की बात थी, जब परमेश्वर अब भी उद्धार कर रहे थे, और एक सच्चा विश्वासी एक विनम्र सेवक था जो परमेश्वर के वचन को लेकर उसका संदेशवाहक बनकर संसार में गया था। हम लोगों से आग्रह करते है – "दया के लिये पुकारो, दया के लिये, क्योंकि परमेश्वर दया करने वाला परमेश्वर है।" विशेषकर अंत के दिनों में हम लोगों को बता रहे है कि वे जाने, परमेश्वर एक बड़ी भीड़ को बचा रहे थे। हमने लोगों से कहा, ''परमेश्वर के पास जाओ, संभव है कि वह आपको भी उस गिनती में शामिल कर ले, और आप पर दया करके उद्धार करे।'' बाईबल के अनुसार यह सब काम आँसुओं के साथ किया गया था। बहुत बार सच्चे विश्वासी वास्तव में रोयें, यद्यपि शाब्दिक अर्थ में आँसू बहाना आवश्यक नहीं है, परन्तु कुछ बहुत ही विश्वासयोग्य सेवक रहे जिन्होंने सचमुच आँसुओं को बहाया। परन्तु सुसमाचार प्रचार करना भी आँसुओं को बहाने के जैसा कार्य था। परन्तु परमेश्वर के बहुत से सेवकों ने वास्तव में आँसू बहाये, विशेष रूप में उनके अपने परिजनों के लिये, जब उन्होंने प्रभु से उनके लिये प्रार्थनाएँ की और प्रभु से मांगा – ''हे प्रभु, वे नहीं देखते, वे नहीं सुनते, वे नहीं समझते, क्या आप उन पर दया न करेंगे ?''

परन्तु न्याय के दिन और भविष्य में, परमेश्वर ने सभी आँसू पोंछ दिये है। अब आँसू नहीं बहाये जाएंगे। परमेश्वर ने न्याय के दिन की तुलना 'आँसू बहाने' से नहीं की है, ध्यान दे, प्रभु लूका 6:20 में कहते है :

तब उस ने अपने चेलों की ओर देखकर कहा; धन्य हो तुम, जो दीन हो, क्योंकि परमेश्वर का राज्य तुम्हारा है।

फिर से कहूंगा, यह संदर्भ उस समय का है जब उद्धार मिलना संभव था। तब परमेश्वर के लोग रोयें परन्तु भविष्य में वे हँसेंगे। यदि हम आगे पढ़े, लूका 6:24 में प्रभु कहते है :

परन्तु हाय तुम पर; जो धनवान हो, क्योंकि तुम अपनी शान्ति पा चुके।

यहाँ भविष्यकाल का उपयोग हुआ है और यह न्याय के दिन की ओर संकेत करता है (जब वें न्याय के दिन के पूर्व, जो कि अब भी उद्धार का दिन था, हँसे थे), जब उद्धार न पाये लोग रोएंगे और विलाप करेंगे। एक समय आयेगा जब वे एसाव के समान ठहरेंगे, जो अपने पिता इसहाक से आशीषें मांगता है और आँसू बहाता है। वह उस समय नहीं रो रहा था जब आशीषें उपलब्ध थी, परन्तु जब आशीषें दी जा चुकी, तब वह रो रहा था। आज यही आत्मिक स्थिति है। परमेश्वर की आशीष, जो की उद्धार है, पहले ही उसके सभी चुने हुओं को दी चुकी है, जिनके नाम मेम्ने की जीवन की पुस्तक में लिखे हुये है।

आशीष दी जा चुकी है, समय हो चुका है, परन्तु अब भी लोग है, एसाव जिनकी तस्वीर है, वे चाहते हैं कि उद्धार का दिन जारी रहे। वे उस भाषा का उपयोग भी करेंगे जो बाईबल के अनुसार सही है और जिसमें परमेश्वर को उद्धार का पूरा काम करते हुये बताया गया है। परन्तु वे एसाव के समान है, वे चाहते है कि उद्धार के सुसमाचार को सुनाने का कार्य चलता रहे और यही कारण है कि वे आँसुओं के साथ निवेदन कर रहे है क्योंकि सुसमाचार की पहिचान उद्धार के दिन से की जाती है। वे बार बार कह रहे हैं कि परमेश्वर अब भी उद्धार कर रहे हैं, वे अब भी पापियों पर दया कर रहे है और अब भी उद्धार पाने का दिन है। वे परमेश्वर को आँसुओं से द्रवित करना चाहते है और न्याय के दिन में उद्धार के सुसमाचार के प्रचार के द्वारा अपने प्रयास कर रहे हैं, परन्तु यह नहीं हो सकता, क्योंकि बाईबल के अनुसार परमेश्वर 'बिना दया किये न्याय' करेगा। उन दिनों में परमेश्वर के लोगों के लिये आँसू नहीं होंगे, उनके लिये अब 'विलाप करना', रोना और 'आँसुओं के साथ' बोने का समय बीत चुका। अब उनके 'हँसने' का समय है, एक अर्थ में अब परमेश्वर उद्धार के निवेदनों को नहीं सुनेगा, और परमेश्वर के लोगों की पहिचान न्याय के समय 'दस हजार संतों' से की गई है, लिखा है – ''मसीह अपने दस हजार पवित्रों के साथ आया।

आइये हम फिर से प्रकाशितवाक्य 21:4 को पढ़े :

और वह उन की आंखोंसे सब आंसू पोंछ डालेगा; और इस के बाद मृत्यु न रहेगी, और न शोक, न विलाप, न पीड़ा रहेगी; पहिली बातें जाती रहीं।

ग्रीक शब्द जिसका अनुवाद 'जाते रहे' (passed away) किया गया है, वह प्रकाशितवाक्य 21:1 में आये शब्द से भिन्न है जहाँ लिखा है :

फिर मैं ने नये आकाश और नयी पृथ्वी को देखा, क्योंकि पहिला आकाश और पहिली पृथ्वी जाती रही थी, और समुद्र भी न रहा।

पद 1 में 'जाते रहे' शब्द स्ट्रॉंग शब्द सुची # 3928 है। और पद 4 में 'जाते रहे' शब्द स्ट्रॉंग शब्द सुची # 565 है, यह बिल्कुल अलग शब्द है। अकसर इस शब्द का उपयोग 'अलग हुए', 'गये' या 'जा चुके' (departed, went away or gone) के अर्थ में हुआ है, यहाँ यही विचार है। पहली बातें जाती रही, वे जा चुकी है, अब उनका अस्तित्व नहीं है। पुराना संसार और पुराना आकाश अब जा चुके है। वे चले गये है। पद 4 में "पहली बातें" शब्द को अकसर 'प्रथम' के अर्थ में अनुवाद किया जाता है। उदाहरण के लिये 1 कुरिन्थियों 15:45–46 में यह लिखा है :

ऐसा ही लिखा भी है, कि प्रथम मनुष्य, अर्थात आदम, जीवित प्राणी बना और अन्तिम आदम, जीवनदायक आत्मा बना। परन्तु पहिले आत्मिक न था, पर स्वाभाविक था, इस के बाद आत्मिक हुआ।

मैं इस पद को पढ़ना चाहता था क्योंकि यह प्रक्रिया परमेश्वर ने स्थापित की थी। प्रथम "स्वाभाविक" है और तब "आत्मिक" है। पहले सांसारिक मनुष्य आदम था और तब स्वर्गिक मनुष्य मसीह यीशु है। पहले यह भौतिक जगत या पृथ्वी है, उसके बाद हमें एक नयी पृथ्वी मिलेगी, और हम वर्णन भी नहीं कर सकते कि वह पृथ्वी कैसी होगी क्योंकि हम नहीं जानते हैं। परन्तु तरीका यही है – पहले भौतिक (स्वाभाविक) और तब आत्मिक। इस प्रकार जो बातें प्रथम थी वे जाती रही।

प्रकाशितवाक्य 21:4 में "पहली बातें" अनुवाद किया गया है, परन्तु प्रकाशितवाक्य 21:1 में 'पहला आकाश और पहली पृथ्वी' अनुवाद किया गया है। प्रकाशितवाक्य 21:4 में कहा गया है "पहली बातें जाती रही" इसलिये हम इसे इस प्रकार पढ़ सकते है – 'क्योंकि प्रथम बातें चली गई है या जा चुकी है, और इसका संबंध नये आकाश और नयी पृथ्वी' के विषय में कहे गये आरम्भिक कथन से है।

अगले अध्ययन में हम पद 5 पर विचार करेंगे। यह एक और अति सहायक पद है क्योंकि परमेश्वर सारी बातों को नया करने के बारे में कहते है। आपको पता है प्रभु जानते है कि ये बाते कितनी अतुल्य लगती है। परन्तु यह बात सीधे तौर पर कही गयी है, जब प्रभु कहते है – पहला आकाश और पहली पृथ्वी जाती रही और वह एक नया आकाश और

नयी पृथ्वी को बनायेंगे, और वह सब कुछ नया कर देंगे। फिर भी ये बहुत महान कथन है, इसलिये परमेश्वर हमें निश्चय दिलाते है, इसलिये नहीं कि उनके वचनों पर कोई संदेह है, पर वे यह सब हमारे लिये (हमारी निर्बलता के कारण) करते है, जब वे कहते है – ये वचन विश्वास के योग्य और सत्य है। परमेश्वर ने चाहा तो, हमारे अगले अध्ययन में हम पद 5 की ओर और इन प्रोत्साहनदाई कथनों की ओर देखेंगे।

Revelation 21 Series, Study #9 by Chris McCann, originally aired , June 3 , 2015

प्रकाशित वाक्य 21 श्रृंखला, अध्ययन – 9, क्रिस मॅकन, मूल प्रसारण : 3 जून 2015

नमस्कार! ई–बाईबल सहभागिता के प्रकाशितवाक्य के बाईबल अध्ययन में आपका स्वागत है। प्रकाशितवाक्य अध्याय 21 के अध्ययन में यह अध्ययन क्रमांक 9 है, और हम प्रकाशितवाक्य 21:5 पढ़ने जा रहे है :

और जो सिंहासन पर बैठा था, उस ने कहा, कि देख, मैं सब कुछ नया कर देता हूं: फिर उस ने कहा, कि लिख ले, क्योंकि ये वचन विश्वास के योग्य और सत्य हैं।

यहाँ परमेश्वर नये आकाश और नयी पृथ्वी की सृष्टि की बाते करते हैं जिसमें 'नये' लोग रहेंगे, वे सब जो इस संसार में से उद्धार पाये है। इसी बात का संदर्भ लेकर वे कहते है – ''देख, मैं सब कुछ नया कर देता हूँ'', वह एक सर्वथा नयी सृष्टि होगी।

यदि हम वापस वहाँ पहुँच सकते, जब परमेश्वर ने वचन कहे और इस संसार और विश्व को सृजा और मनुष्य को भूमि की मिट्टी से बनाया, तब हम देख पाते कि सभी कुछ नया था और वे अच्छी और सिद्ध थी। उसमें न पाप था, न मृत्यु और न दुर्दशा थी क्योंकि तब तक संसार भ्रष्ट नहीं हुआ था।

परन्तु हम जानते है कि मनुष्य शीघ्र ही पाप में गिरा, जब उसने परमेश्वर की आज्ञा के सत्य से बढ़कर शैतान के झूठ पर विश्वास किया, और उसके परिणाम स्वरूप संसार में मृत्यु आयी। परमेश्वर ने सृष्टि को शाप दिया ताकि शापित मानवजाति पापरहित सृष्टि पर शासन न करे। उस समय से लेकर महामारियाँ, चक्रवात, भूकम्प और सभी प्रकार की बुरी और विनाशकारी बातें इस संसार में आ गयी और संसार दुर्दशा में पड़ गया। लोग दुर्दशा में आ गये। जैसा कि रोमियों के अध्याय 8 में कहा गया है – समस्त सृष्टि उस विकृति के कारण जो उसमें आ चुकी है, अब तक मिलकर कराहती और पीड़ाओं में पड़ी तड़पती है।

परन्तु अब परमेश्वर कह रहे हैं कि पहली बातें जाती रही, और परमेश्वर एक बार फिर से नया सृजन कर रहे है। हमने इस विषय पर पहले भी चर्चा की है, परन्तु परमेश्वर काम करने वाले परमेश्वर है। वे बाईबल में कहते है कि वे आलस्य से घृणा करते हैं, इसलिये वे मनुष्य को काम करने की आज्ञा देते है। हम काम करते हैं क्योंकि स्वयं परमेश्वर भी काम करते हैं और वे स्वयं अपने बनाये नियमों का पालन करते है। जब हम उत्पत्ति की पुस्तक में पीछे जाकर सृष्टि किये जाने का वर्णन पढ़ते है, हम पाते हैं कि परमेश्वर ने छह दिन काम किया। उसने इन पहले छह दिनों में क्या काम किया ? वे संसार, विश्व, सूर्य, चन्द्रमा, तारों, पशुओं, मनुष्यों और उन सब वस्तुओं की सृष्टि कर रहे थे जिन्हें वे इस संसार में रखने वाले थे। सातवें दिन, परमेश्वर ने विश्राम किया, उस काल से ही उन्होंने आने वाले 11,000 वर्षों के लिये सातवें दिन 'सब्त के दिन' की स्थापना की। सातवाँ दिन अर्थात् शनिवार, सब्त का दिन था, और यह मनुष्यों को मसीह के कामों की ओर संकेत करते हुये यह सिखाने के लिये था कि 'विश्राम' का समय आयेगा। परमेश्वर के चुने हुओं को परमेश्वर के कामों पर विश्वास करना था, क्योंकि उद्धार किसी भी रूप में मनुष्यों के कामों के द्वारा नहीं था।

मैंनें इन बातों का उल्लेख इसलिये किया क्योंकि परमेश्वर का कार्य सृष्टि करना था, इस कारण जब हम अनंत अतीत में पीछे देखते है, हम पाते हैं कि परमेश्वर सदा से ही है और वे सदा–सर्वदा के लिये अस्तित्व में है। यदि हम समय की भाषा का उपयोग करे तो यह अतिशय लम्बा, बहुत ही लम्बा समय है। परमेश्वर अनंत अतीतकाल में क्या कर रहे थे ? हम जानते है कि वे काम कर रहे थे और बाईबल से हम एक बात जानते है कि परमेश्वर अपने काम को सृष्टि करना कहते है। इस कारण, वे सक्रिय रूप में जगतों की सृष्टी एवं उनके सबके सृजन में लगे थे जो उन्होंने बनाया। उन्होंने इस संसार को सृजा, परन्तु बाईबल हमें बताती है कि उन्होंने केवल यही एक संसार नहीं सृजा है। अंतिम दिन जब यह संसार नष्ट होता है, तब होने वाली बातों के विषय में बाईबल क्या कहती है ? परमेश्वर वचन कहेंगे और एक नये आकाश और नयी पृथ्वी की सृष्टि करेगे। इस प्रकार एक बार फिर हम पाते हैं कि परमेश्वर सृजन का कार्य कर रहे हैं। यह दूसरी बार है जब हमनें यह जाना है परन्तु बाईबल "अधिकारियों और सामर्थों" के बारे में लिखती है, और वे संसार के इतिहास में होने वाली सभी घटनाओं के किसी न किसी रूप में गवाह है, परमेश्वर ने अपने उद्धार के कार्यक्रम को उनके सामने रखा है, जो परमेश्वर के प्रेम, दया, भलाई, कृपा और अन्य महान् गुणों को प्रगट करते है।

परन्तु हम यह निश्चित तौर पर जानते है कि परमेश्वर बिना कार्य के नहीं था। ऐसा करना पाप है और परमेश्वर अपने नियम (व्यवस्था) का पालन करता है, इस कारण वह बहुत अधिक सक्रिय एवं कर्मशील रहा है, इसकी पूरी संभावना है, वह बहुत सी बातों के सृजन

और प्रबंधन के कार्य में व्यस्त रहा है, जैसा उसने इस संसार के लिये भी किया था। जबकि यह संसार गतिमान है, परमेश्वर ने पीढ़ी दर पीढ़ी नये 'जीवन' का सृजन किया है, और उन पर निगरानी रख रहा था, उनका प्रबंधन कर रहा था। बाईबल कहती है कि प्रत्येक व्यक्ति का जीवन परमेश्वर के हाथ में है। परमेश्वर ने हमें जीवित रखा है और यह भी सृष्टि की निगरानी करने के उसके काम का एक भाग है, और यह उन कामों का एक भाग है जो वे करते है।

इस बात की अब पूरी संभावना है कि हम 7 अक्तुबर 2015 को इस संसार के अंत की ओर बड़ी शीघ्रता से बढ़ रहे है जो केवल इस संसार का अंत ही नही होगा बल्की नया आकाश और नई पृथ्वी का आरंम्भ भी होगा, जो कि पूरी रीति से नई सृष्टी है। और यह बात परमेश्वर के लिये अनजानी नहीं है। हम जानते हैं कि उन्होंने इस संसार की सृष्टि की, और बाईबल के प्रमाण बताते है कि उन्होंने इस वर्तमान सृष्टि के अतिरिक्त अन्य संसारों की सृष्टि भी की है, हम जानते हैं कि बाईबल प्रगट करती है कि वे फिर से सृष्टि करेंगे और हमें यह नहीं सोचना चाहिये कि वे केवल नये आकाश और नयी पृथ्वी को ही सृजेगे। परमेश्वर अनंतकालीन भविष्यकाल में, लगातार परमेश्वर रहेंगे, और वे एक अद्भुत असीम बुद्धी का व्यक्तित्व है, और निश्चय ही उनके मन में उनके लिये और उनकी चुनी हुई संतानों के लिये अन्य सृष्टियों की योजना अवश्य होगी। मैं समझता हूँ कि परमेश्वर अन्य संसारों की भी सृष्टि करेंगे और काम के रूप में सृजन करते रहेंगे, इस बात को लेकर किसी के मन को कोई प्रश्न नहीं होना चाहिये।

हम केवल एक विशेष सृष्टि पर ही विचार कर रहे हैं क्योंकि उसका अर्थ है कि इस संसार के विश्वासीजन उस दूसरे संसार में भेजे जाएंगे। समस्या यह है कि परमेश्वर के सृजन के सभी कामों में केवल यही एक संसार है जो भ्रष्ट है। और यह बात उस नयी पृथ्वी में नहीं होगी। वह भ्रष्ट नहीं की जायेगी और यही कारण है कि परमेश्वर ने उसे अनंतकालीन निवास बताया है। वह एक अनंतकालीन घर होगा और परमेश्वर की संतानों के निवास करने का स्थान, और एक प्रकार से वह अनंतकाल के लिये है क्योंकि वह कभी भ्रष्ट नही होगी। जैसा हम जानते हैं कि यह संसार भ्रष्ट हो चुका है और पाप के कारण इसका नाश किया जाना अवश्य है। यही कारण है कि जिनका उद्धार नहीं हुआ है, उन्हें भी नाश होना चाहिये। नयी पृथ्वी परमेश्वर की संतानों के लिये अनंतकाल की मीरास है और वे उसमें सदा–सर्वदा जीवित रहेंगे, इस कारण उस संसार में कोई भ्रष्टता नहीं होगी, और न उन अन्य बातें में जिनकी परमेश्वर सृष्टि करेंगे, कोई भ्रष्टता होगी। परमेश्वर की केवल यही एक सृष्टि है जिसमें उन्होंने शैतान को अनुमति दी कि वह हव्वा के सामने एक परीक्षा रखे। परमेश्वर ने आदम और हव्वा को पाप में गिरने दिया ताकि वे समस्त अधिकारों और सामर्थ को परमेश्वर के अद्भुत गुणों का प्रदर्शन कर सके।

परमेश्वर प्रेम है यह जानना एक बात है पर उन्हें कार्य रूप में देखना एक बिल्कुल अलग बात है, ''परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम किया कि उस ने अपना इकलौता पुत्र दे दिया।" परमेश्वर दयावन्त है यह जानना एक बात है परन्तु ऐसा लोगों पर परमेश्वर को दया करते हुये देखना, जो दया के योग्य नहीं परन्तु नाश होने के योग्य है, एक बिल्कुल अलग बात है। फिर भी परमेश्वर उन्हें अनंतकालीन और सदा–सर्वदा बनी रहने वाली दया प्रदान करता है। इस प्रदर्शन के द्वारा परमेश्वर ने अपने महिमामय व्यक्तित्व के गुणों को प्रगट किया, जब उसने इस संसार में भ्रष्टता आने दी और मनुष्य को पाप में गिरने दिया। कहने का अभिप्राय यह नहीं है कि परमेश्वर पाप के लिये किसी रीति से जिम्मेवार है। परमेश्वर पर पाप की जिम्मेवारी नहीं है क्योंकि मनुष्य को एक जिम्मेवार अभिकर्त्ता के रूप में सृजा गया था, और मनुष्य स्वयं अपने पाप के लिये जिम्मेवार है। परीक्षा की अनुमति देने और मनुष्यों को पाप करने से न रोकने के लिये हम परमेश्वर को दोष नहीं दे सकते। हालांकि परमेश्वर आदम और हव्वा के पाप के लिये और उन सबके पापों के लिये जो आदम की देह में थे, जिम्मेवार नहीं है, हम स्वयं जिम्मेवार है। हम पाप के दोषी है, उसे हम अपने ऊपर लाये है।

फिर भी परमेश्वर प्रकाशितवाक्य 21:5 में यह अद्‌भुत कथन करते है।

देख, मैं सब कुछ नया कर देता हूं

जब परमेश्वर ऐसा कहते हैं, हमें समझना होगा कि यह मनुष्यों के द्वारा कहीं गयी किसी बात के समान नहीं है। इस संसार में लोग हर समय 'नये' शब्द का उपयोग करते है, वे कहते है – यह नया और उन्नत उत्पाद है, यह नयी कार है, या यह नया घर है, परन्तु फिर भी वह पुराने संसार का ही एक भाग है। परमेश्वर एक पूरी तरह से नयी सृष्टि की बात कहते हैं।

परमेश्वर ने नये सृजन की यह प्रक्रिया 'उद्धार की अपनी योजना' में ही आरम्भ कर दी थी। आइये हम 2 कुरिन्थियों 5:17 पढ़ें :

सो यदि कोई मसीह में है तो वह नई सृष्टि है: पुरानी बातें बीत गई हैं; देखो, वे सब नई हो गईं।

हम प्रकाशितवाक्य 21:1 में पृथ्वी के बारे में पढ़ते है, यह उससे काफी मिलता–जुलता प्रतीत होता है :

फिर मैं ने नये आकाश और नयी पृथ्वी को देखा, क्योंकि पहिला आकाश और पहिली पृथ्वी जाती रही थी, और समुद्र भी न रहा।

यह परमेश्वर ने उनके विषय में कहा है जिन्हें उसने उद्धार दिया है, ये उसके चुने हुये लोग है जिन्हें उसने मनुष्यों की बड़ी भीड़ से बचाया है, ''इसलिये यदि कोई मसीह में है तो वह नई सृष्टि है, पुरानी बातें बीत गई है, देखो सब बातें नई हो गई है।'' उस मनुष्य के लिये सब कुछ नया हो चुका है, और हमें आश्चर्य होता है कि यह कैसे हो सकता है। परमेश्वर हमारे उद्धार के बाद हमें नयी सृष्टि के रूप में कैसे देख सकते है जबकि हम अपनी देहों में वही व्यक्ति है ? हम वैसे ही लगते है, वैसे ही दिखते है, और कभी–कभी वैसा ही व्यवहार भी करते है, इसलिये परमेश्वर इस भाषा का उपयोग हमारे लिये कैसे कर सकते है ? परमेश्वर हमारी आत्मा के प्रथम पुनरूत्थान को देखते है, परमेश्वर द्वारा उद्धार प्राप्त व्यक्ति का हृदय आमूल रूप में बदल चुका होता है। हमारा पुराना हृदय कैसा था ? बाईबल कहती है – मन तो सब वस्तुओं से अधिक धोका देने वाला है, उसमें असाध्य रोग लगा है, कौन उसे जान सकता है ? सभी प्रकार की बुराई मनुष्य के हृदय से निकलती है, परन्तु परमेश्वर ने उस हृदय को बदल दिया। यहेजकेल में परमेश्वर द्वारा उपयोग की गई भाषा पर विचार करे। यदि आप सोचते हैं कि परमेश्वर द्वारा 'नया' बनाने की बात केवल नये–नियम में है तो पुराने नियम में, यहेजकेल 36:26–27 में भी हम इसे देखते है :

मैं तुम को नया मन दूंगा, और तुम्हारे भीतर नई आत्मा उत्पन्न करूंगा; और तुम्हारी देह में से पत्थर का हृदय निकाल कर तुम को मांस का हृदय दूंगा। और मैं अपना आत्मा तुम्हारे भीतर देकर ऐसा करूंगा कि तुम मेरी विधियों पर चलोगे और मेरे नियमों को मान कर उनके अनुसार करोगे।

यह नया हृदय है, नयी आत्मा और यह नयी सृष्टि है। आप अब स्वर्ग के राज्य के नागरिक है। आप इस संसार के अंधकार से परावर्तित होकर परमेश्वर के प्रिय पुत्र के राज्य में लाए गये है। उद्धार में आप मसीह के साथ स्वर्गीय आसनों में बिठाये गये है, और 1 यूहन्ना के अनुसार आपकी आत्मा का नया जन्म हुआ है और वह हर दृष्टि से सिद्ध है, उसमें पाप नहीं है। आत्मा के स्तर पर परमेश्वर की संतान में किसी भी प्रकार का कोई अधर्म नहीं और वह पूर्ण रूप में 'एक नयी सृष्टि' है। जब परमेश्वर किसी बात को नया करने की बात कहते हैं, हम निश्चित रूप में मान सकते हैं कि उसमें अब पाप नहीं है। यदि वह एक नया हृदय है, तो उस हृदय में पाप नहीं है। यदि उसमें पाप होगा, वह पुराने हृदय के समान ही होगा, 'नयी आत्मा' पाने का अर्थ भी मूलरूप में यही है। इसलिये जब परमेश्वर 'नये आकाश और नयी पृथ्वी' की बात कहते है, उसमें कोई भी पाप नहीं होगा परन्तु उन्होंने नया बनाने की प्रक्रिया को अपने उद्धार के कार्यक्रम में आरम्भ कर दिया था, जब उन्होंने संसार में से लोगों को उद्धार दिया। प्रथम पुनरूत्थान ने उनको 'नई सृष्टि' बनाया, परन्तु परमेश्वर चुने हुये लोगों के उद्धार के कार्य को उनकी देहों के पुनरूत्थान के द्वारा पूरा करेगा और वे नई आत्मिक देहें प्राप्त करेंगे। 1 कुरिन्थियों अध्याय

15 के अनुसार यह एक आत्मिक देह है, किन्तु जब हम इन दो शब्दों को आत्मिक देह के रूप में एक साथ रखते है, तब हम वास्तव में इसे नहीं समझ सकते, क्योंकि हम शरीर और आत्मा को एक दूसरे से अलग जानते है (आत्मा अर्थात् देह रहित)। परन्तु जब हमें आत्मिक देह प्राप्त होगी, तब हम शरीर और आत्मा दोनों में निष्पाप और सिद्ध व्यक्तित्व बनेंगे, और हमें नये आकाश और नयी पृथ्वी में रखा जायेगा जहाँ हम परमेश्वर के साथ सदा–सर्वदा निवास करेंगे। वहाँ किसी प्रकार का कोई पाप न होगा।

परमेश्वर यही विचार इफिसियों 2:15 में भी रखते है :

और अपने शरीर में बैर अर्थात वह व्यवस्था जिस की आज्ञाएं विधियों की रीति पर थीं, मिटा दिया, कि दोनों से अपने में एक नया मनुष्य उत्पन्न करके मेल करा दे।

उद्धार ने यही काम किया है, उसने दो से एक नया मनुष्य बना दिया है। वह एक नये हृदय और नयी आत्मा और परमेश्वर की उसमें निवास करने वाली उपस्थिति के साथ एक 'नयी सृष्टि' है। यह एक अद्‌भुत तथ्य है जो परमेश्वर की संतान के साथ पहले ही घट चुका है।

साथ ही, इफिसियों 4:21–24 में यह भी लिखा है :

वरन तुम ने सचमुच उसी की सुनी, और जैसा यीशु में सत्य है, उसी में सिखाए भी गए। कि तुम अगले चालचलन के पुराने मनुष्यत्व को जो भरमाने वाली अभिलाषाओं के अनुसार भ्रष्ट होता जाता है, उतार डालो। और अपने मन के आत्मिक स्वभाव में नये बनते जाओ। और नये मनुष्यत्व को पहिन लो, जो परमेश्वर के अनुसार सत्य की धार्मिकता, और पवित्रता में सृजा गया है॥

यह ऐसा कार्य है जो परमेश्वर को करना है। यूहन्ना के अध्याय 6 में लिखा है कि ''यह परमेश्वर का कार्य है कि तुम विश्वास करो'', हमारा उद्धार मसीह पर विश्वास करने के द्वारा हुआ है, इसलिये अवश्य है कि परमेश्वर हम में कार्य करे और उद्धार का कार्य करे और उस कार्य की पहिचान यह है कि हम पुराने मनुष्यत्व को उतार दे और नये मनुष्यत्व को पहिन ले, क्योंकि परमेश्वर का आत्मा हमारे भीतर कार्य करता है और हमें परमेश्वर की सुइच्छा पूरी करने की अनवरत इच्छा देता है।

हम पुराने नियम में एक और वृतान्त पर विचार करेंगे जिसमें परमेश्वर नयी बातें करने के विषय में चर्चा करते है। यशायाह 43:18 में लिखा है :

अब बीती हुई घटनाओं का स्मरण मत करो, न प्राचीनकाल की बातों पर मन लगाओ।

यह एक रोचक कथन है, क्योंकि परमेश्वर ने ठीक यही बात कही, जब उसने यशायाह 65:17 में 'नये आकाश और नयी पृथ्वी' के सृजन की बात कही।

क्योंकि देखो, मैं नया आकाश और नई पृथ्वी उत्पन्न करने पर हूं, और पहिली बातें स्मरण न रहेंगी और सोच विचार में भी न आएंगी।

हम विश्वास कर सकते है कि यशायाह 43:18 में भी यही विचार है और परमेश्वर इस वर्तमान संसार की बात कर रहे हैं, जब वे कहते है, ''अब बीती हुई घटनाओं का स्मरण मत करो, न प्राचीनकाल की बातों पर मन लगाओ।''

फिर यशायाह 43:19–21 में आगे वह कहता है :

देखो, मैं एक नई बात करता हूं; वह अभी प्रगट होगी, क्या तुम उस से अनजान रहोगे? मैं जंगल में एक मार्ग बनाऊंगा और निर्जल देश में नदियां बहाऊंगा। गीदड़ और शुतर्मुर्ग आदि जंगली जन्तु मेरी महिमा करेंगे; क्योंकि मैं अपनी चुनी हुई प्रजा के पीने के लिये जंगल में जल और निर्जल देश में नदियां बहाऊंगा। इस प्रजा को मैं ने अपने लिये बनाया है कि वे मेरा गुणानुवाद करें॥

जब हम इस पूरे वृतान्त पर विचार करते हैं, तब यह समझ सकते हैं कि परमेश्वर के एक नया कार्य करने का अभिप्राय उनके द्वारा उनके लिये एक प्रजा के निर्माण की ओर संकेत करना है। 'बनाने' या 'निर्माण' की भाषा हमें 'सृजन' का स्मरण दिलाती है, उदाहरण के लिये, आदम को उसने भूमि की मिट्टी से बनाया। परमेश्वर विश्वासियों की एक नयी देह को बनायेगा, प्रथम आदम की रीति पर नहीं, परन्तु अंतिम आदम अर्थात् प्रभु यीशु मसीह की रीति पर, और हम आदम के समान नहीं परन्तु मसीह के समान होंगे। जब परमेश्वर कहते हैं, वे एक नयी बात करेंगे, वे एक नया सुसमाचार (वाचा) भेजेंगे और वे एक 'नयी सृष्टि' बनायेंगे, जैसा पद 18 का अभिप्राय है। वे एक नयी सृष्टि का सृजन करेंगे और पुरानी बातों को स्मरण नहीं किया जायेगा। ये सभी बातें उसमें शामिल है जब परमेश्वर एक 'नई बात' करने के विषय में कहते हैं। जैसा कि उन्होंने हमारी संदर्भ पद प्रकाशितवाक्य 21:5 में कहा है, ''देख मैं सब कुछ नया कर देता हूँ।''

आप जानते हैं कि यह हमारी महिमामय आशा और अपेक्षा है, परमेश्वर के लोग होने के कारण हम प्रतीक्षा कर रहे है कि परमेश्वर अतिशीघ्र इस काम को सम्पन्न करेंगे और एक नये आकाश और नयी पृथ्वी के सृजन के कार्य को करेंगे। परन्तु यह भी रोचक तथ्य है, बाईबल कहती है कि यह सृष्टि (यह वर्तमान संसार) भी स्वयं के विनाश (छुटकारा) और नये आकाश एवं नयी पृथ्वी के सृजन की प्रतीक्षा कर रही है। मैं जानता हूँ कि कुछ लोग

जो इस पृथ्वी को सदाकाल तक रखने के पक्ष में है उन्हें यह विचार रास नहीं आयेगा। वे ''मातृभुमि'' का संरक्षण करना चाहते है (वे पृथ्वी को माता कहते है)। परन्तु परमेश्वर ने पृथ्वी के मुँह में शब्द दिये हैं, यदि वह बोल सकती, जैसा कि रोमियों 8:19 में लिखा है,

क्योंकि सृष्टि बड़ी आशाभरी दृष्टि से.....

यहाँ इस शब्द का सही अनुवाद "सृष्टि" है जैसा कि इसी अध्याय में आगे अनुवाद किया गया है। रोमियों 8:19–22 में यह लिखा है :

क्योंकि सृष्टि बड़ी आशाभरी दृष्टि से परमेश्वर के पुत्रों के प्रगट होने की बाट जोह रही है। क्योंकि सृष्टि अपनी इच्छा से नहीं पर आधीन करने वाले की ओर से व्यर्थता के आधीन इस आशा से की गई। कि सृष्टि भी आप ही विनाश के दासत्व से छुटकारा पाकर, परमेश्वर की सन्तानों की महिमा की स्वतंत्रता प्राप्त करेगी। क्योंकि हम जानते हैं, कि सारी सृष्टि अब तक मिलकर कराहती और पीड़ाओं में पड़ी तड़पती है।

सृष्टि जैसा कि लिखा है, ''पीड़ा में तड़पती और कराहती है'' जबकि वह छुटकारे के लिये ''परमेश्वर के पुत्रों के प्रगट होने की बाट जोह रही है।'' यह बहुत रूचिकर है कि परमेश्वर सृष्टि के विषय में कहते हुये इस प्रकार की भाषा का उपयोग करते है। यह भाषा एक पापी से अपेक्षित है जो अपने छुटकारे की प्रतीक्षा कर रहा है।

इस अध्ययन में अब हमारे पास समय कम है। जब हम प्रकाशित वाक्य की किताब के हमारे अगले बाईबल अध्ययन में साथ आएँगे तब हम इस विषय पर चर्चा करेंगे।

Revelation 21 Series, Study #10 by Chris McCann, originally aired , June 5 , 2015

प्रकाशित वाक्य 21 श्रृंखला, अध्ययन – 10, क्रिस मॅकन, मूल प्रसारण : 5 जून 2015

नमस्कार! ई–बाईबल सहभागिता के प्रकाशितवाक्य के बाईबल अध्ययन में आपका स्वागत है। प्रकाशितवाक्य अध्याय 21 के अध्ययन में यह अध्ययन क्रमांक 10 है, और हम प्रकाशितवाक्य 21:5 पढ़ने जा रहे है :

और जो सिंहासन पर बैठा था, उस ने कहा, कि देख, मैं सब कुछ नया कर देता हूं: फिर उस ने कहा, कि लिख ले, क्योंकि ये वचन विश्वास के योग्य और सत्य हैं।

हम यशायाह 43 में दिये परमेश्वर के वचन पर भी विचार कर रहे थे, पद 18 से 21, वहाँ परमेश्वर ने कहा कि वे एक नयी बात करेंगे और पुरानी बातें स्मरण नहीं की जायेगी, आगे

उन्होंने मरूस्थल में जल के सोते निकालने की बात कही है, और अपने लिये 'नयी प्रजा' बनाने की भी और साथ ही नये आकाश और नयी पृथ्वी के सृजन का विचार भी प्रगट किया है। वहाँ से हम रोमियों के अध्याय 8 में आये। मैं चाहता हूँ हम पढ़े, रोमियों 8:18–19 में लिखा है :

क्योंकि मैं समझता हूं, कि इस समय के दुःख और क्लेश उस महिमा के साम्हने, जो हम पर प्रगट होने वाली है, कुछ भी नहीं हैं।क्योंकि सृष्टि बड़ी आशाभरी दृष्टि से परमेश्वर के पुत्रों के प्रगट होने की बाट जोह रही है।

इस वृतान्त में "सृष्टी" शब्द आया है। रोमियों 8:19–23 में यह लिखा है :

क्योंकि सृष्टि बड़ी आशाभरी दृष्टि से परमेश्वर के पुत्रों के प्रगट होने की बाट जोह रही है। क्योंकि सृष्टि अपनी इच्छा से नहीं पर आधीन करने वाले की ओर से व्यर्थता के आधीन इस आशा से की गई। कि सृष्टि भी आप ही विनाश के दासत्व से छुटकारा पाकर, परमेश्वर की सन्तानों की महिमा की स्वतंत्रता प्राप्त करेगी। क्योंकि हम जानते हैं, कि सारी सृष्टि अब तक मिलकर कराहती और पीड़ाओं में पड़ी तड़पती है। और केवल वही नहीं पर हम भी जिन के पास आत्मा का पहिला फल है, आप ही अपने में कराहते हैं; और लेपालक होने की, अर्थात अपनी देह के छुटकारे की बाट जोहते हैं।

हम देख सकते है कि परमेश्वर उसी भाषा का उपयोग कर रहे है, यह बताने के लिये कि यह सृष्टि विनाश के अधीन की गई है और वे अदन की वाटिका का संदर्भ ले रहे हैं जब सृष्टि 'अच्छी' थी, संसार सिद्ध था और मनुष्य भी सिद्ध था। परन्तु जब मनुष्य पाप में गिरा, मृत्यु का दण्ड उस पर आया और मनुष्य पर शाप आया, और परमेश्वर ने सृष्टि को भी शाप दिया क्योंकि वे एक असिद्ध मनुष्य को सिद्ध सृष्टि पर अधिकार नहीं दे सकते थे। यह परमेश्वर के उद्देश्य के अन्य अभिप्रायों को भी पूरा करता था, क्योंकि मनुष्य को मिले शाप के कारण सृष्टि पर भी शाप था, और अब वह आसानी से भूमि पर खेती करके, आराम से फल नहीं प्राप्त कर सकता था। अब मनुष्य को पृथ्वी पर ''माथे के पसीने'' के साथ परिश्रम करना था और भूमि कांटे और ऊटकटारे उगाने वाली थी। हम यह भी जानते हैं कि सृष्टि पर शाप आने के कारण अन्य सभी प्रकार की बुरी बातें भी संसार में आयी, जैसे कि चक्रवात, भूकम्प, सुनामी और बवंडर और वे मनुष्य और सृष्टि पर परमेश्वर के दण्ड का स्मरण कराने के परमेश्वर के उद्देश्य को पूरा करते है।

यहाँ हम देखते हैं, परमेश्वर सृष्टि के मुँह में शब्द दे रहे हैं, मानों वह स्वयं बोल रही है, और उसके शब्दों से पृथ्वी के संरक्षण या ऊर्जा के प्रबंधन का विचार अभिव्यक्त नहीं होता कि यह संसार आगे करोड़ों वर्ष तक इसी प्रकार चलता रहेगा। नहीं, इसके स्थान पर

परमेश्वर सृष्टि की छुटकारे की अभिलाषा को अभिव्यक्त करते हैं, जैसा कि पद 21 में कहा गया है, ''सृष्टि भी आप ही..... स्वतंत्रता प्राप्त करेगी।'' केवल यही पर 'छुटकारा' शब्द अनुवाद हुआ है, अन्य कुछ स्थलों में इसका अनुवाद 'स्वतंत्रता' किया गया है, उदाहरण के लिये यूहन्ना 3:36 में लिखा है, ''यदि पुत्र तुम्हें स्वतंत्र करे तो तुम अवश्य स्वतंत्र किये जाओगे।'' यहाँ भी मूल शब्द वही है जिसका अर्थ पाप के दासत्व से स्वतंत्र किया जाना है। यहाँ रोमियों 8:21 में भी सृष्टि का संबंध दासत्व से है। सृष्टि भी छुटकारा पायेंगी या स्वतंत्र की जायेगी अर्थात ''सृष्टि भी आप ही विनाश के दासत्व से छुटकारा पाकर परमेश्वर की सन्तानों की महिमा की स्वतंत्रता प्राप्त करेगी।'' यहाँ 'स्वतंत्रता' के लिये उपयोग में आया मूल शब्द 'स्वतंत्र किये जाने' का भाव रखता है जैसा कि गलतियों 5:1 में लिखा है :

मसीह ने स्वतंत्रता के लिये हमें स्वतंत्र किया है; सो इसी में स्थिर रहो, और दासत्व के जूए में फिर से न जुतो॥

इस प्रकार, सृष्टि कराहती है, और जैसा लिखा है, ''पीड़ाओं में पड़ी तड़पती है", जबकि वह छुटकारा पाने और परावर्तित होने की प्रतीक्षा करती है जैसे कि विश्वासियों की देह, जो अब तक उनकी भ्रष्ट शारीरिक देहों में है। यद्यपि परमेश्वर ने हमें उद्धार दिया है और हमें नया हृदय और एक नयी आत्मा दी है, और हम हमारी आत्मा के अस्तित्व में एक नये प्राणी है, पर बाहरी तौर पर हम अब भी पहले जैसे ही है। अब भी हम में पाप है, पाप की निर्बलता है, और हमारे शरीरों की मृत्यु निश्चित है, यदि पर्याप्त समय मिले और परमेश्वर की इच्छा हो, इसलिये परमेश्वर की सन्तान अपने भीतर 'कराहती' है और देह के छुटकारे की बाट जोहती है। वह देह के पुनरूत्थान की प्रतीक्षा करता है, और परमेश्वर भी सृष्टि के संबंध में ठीक यही बात कह रहे है। सरल शब्दों में कहे तो, सृष्टि भी नयी बनना चाहती है। निश्चय यह बात स्वयं परमेश्वर कह रहे हैं, इसलिये सत्य है। यह ऐसी बात नहीं है कि बिल्लियों, कुत्तों, सिंहों या शेरों और भालुओं को इस बात की समझ है, परन्तु सम्पूर्ण सृष्टि (जिसमें सभी जानवर, कीड़े मकोड़े, मछलियां, पक्षीगण और वनस्पति शामिल है) मिलकर कराह रही है और छुटकारे की प्रतीक्षा मे है।

यदि प्रभु चाहे, और यदि हम 7 अक्तुबर 2015 विषय में सही हैं, तो यह समय परमेश्वर की संतानों के लिये उसकी शारीरिक देह के अंत का समय है, क्योंकि हम हवा में बादलों पर उठाये जायेंगे, प्रभु से मिलेगे और अपनी नयी पुनरूत्थान प्राप्त आत्मिक देहों को प्राप्त करेंगे। तब इस सृष्टि की लालसाओं का अंत हो जायेगा क्योंकि परमेश्वर बड़े ताप के द्वारा इस सृष्टि को नाश कर देंगे और एक नये आकाश और नयी पृथ्वी की सृष्टि करेंगे

जिसमें धार्मिकता वास करेगी। यह परमेश्वर के लोगों के लिये शुभ समाचार है और इस सृष्टि के लिये एक अद्‌भुत समाचार है – यह समय उसके दासत्व के अंत का है।

हम वापस हमारी संदर्भ पद में आएँगे, प्रकाशितवाक्य 21:5 में लिखा है :

देख, मैं सब कुछ नया कर देता हूं: फिर उस ने कहा, कि लिख ले,

परमेश्वर प्रेरित यूहन्ना से कह रहे है, और निश्चय परमेश्वर ने प्राचीनकाल के सभी भविष्यद्वक्ताओं को बताया, जिन्होंने बाईबल को लिखा है। हम यह सत्य यिर्मयाह की पुस्तक में पढ़ते है जहाँ परमेश्वर ने यिर्मयाह से कहा, ''जो जो वचन, मैंने तुझ से कहे हैं उन्हें एक पुस्तक में लिख ले।'' और यिर्मयाह के पास एक लिखने वाला था जिसने उन सभी वचनों को लिखा। बाईबल इसी प्रकार परमेश्वर के मुख से सुनकर लिखी गयी थी। और यहाँ बाईबल लेखन के अंत के कालखण्ड में भी परमेश्वर, पवित्र लोगों को उभारने और पवित्र आत्मा के द्वारा प्रेरित करके वचनों को लिखवाने के उसी पुराने तरीके का उपयोग कर रहे हैं।

यहाँ प्रकाशितवाक्य 21:5 में आगे यह लिखा है :

क्योंकि ये वचन विश्वास के योग्य और सत्य हैं।

हम कह सकते हैं कि यह बात पिछली पदों में कहीं गयी सभी बातों पर लागू होती है, वास्तव में यह प्रकाशितवाक्य की सम्पूर्ण पुस्तक पर लागू होती है, क्योंकि जब वे यूहन्ना को ईश्वरीय प्रकाशन दे रहे थे और उससे कह रहे थे कि वह उन सब बातों को लिखे तब परमेश्वर यही कर रहे थे। यह बात प्रकाशितवाक्य की पूरी पुस्तक के लिये सत्य है, और अवश्य ही यह सम्पूर्ण बाईबल के लिये भी सत्य है क्योंकि परमेश्वर ने अपने वचन को सुरक्षित करने की सिद्ध रूप में सुधी ली है, इसलिये उसका प्रत्येक वचन शुद्ध था, जैसा कि हम भजन 12 में पढ़ते हैं – शुद्ध होने के लिये अवश्य है कि वह पवित्र हो और सत्य हो। झूठ उसे अशुद्ध और अपवित्र करेगा और यह हो नहीं सकता। परमेश्वर अपने महात्मय को दर्शाते हुये हमें निश्चय दिला रहे है। वे पाठक से बात कर रहे हैं और वे रूकते हैं, जैसा लिखा है, वर्तमान सृष्टि के विषय में कुछ अद्‌भुत महिमामय कथनों को कहने के बाद कि यह सृष्टि जाती रहेगी और एक नयी सृष्टि आयेगी। उन्होंने कुछ देर पहले कहा कि वे सब कुछ नया कर देंगे, और तब वे रूके, मानों वे पाठक की ओर देख रहे थे, और मनुष्यों के हृदय और मन की दशा और हमारी सीमाओं का विचार कर रहे थे। वे जानते है कि हमने अभी–अभी कुछ विलक्षण कथनों को पढ़ा है। यदि हम बाईबल को उत्पत्ति से पढ़ते और लगातार पढ़ते हुये बाईबल के इस अंतिम भाग में आते, जहाँ परमेश्वर समस्त पुस्तक

(बाइबिल) पर जोर देते हुये यह कथन हम से कहते – ''ये वचन सत्य और विश्वासयोग्य है'', तो हम पिछे मुडते और कह उठते – ''अद्‌भुत!''

इस प्रकार आरम्भ में दिया गया सृष्टि का वृतान्त ''सत्य और विश्वासयोग्य'' है, और दर्शाता है कि यह कैसे हुआ था। तब हमने पाया कि परमेश्वर ने देखा कि मनुष्य लगातार बुराई ही करता आया है, और परमेश्वर ने सृष्टी की उत्पत्ती से 6000 वर्षों के बाद जलप्रलय के द्वारा संसार को नष्ट किया। वह वृतान्त भी 'सत्य और विश्वासयोग्य' है। तब हम अब्राहम, इसहाक, याकूब और यूसुफ जैसे परमेश्वर के विश्वासयोग्य मनुष्यों के जीवनकाल के बारे में पढ़ते है। वे वृतान्त भी 'सत्य और विश्वासयोग्य' है। तब मिस्र देश में 430 वर्षों के दासत्व का वृतान्त है, परमेश्वर द्वारा मूसा को भेजने, मिस्र पर विपत्तियाँ भेजने और उस महाशक्ति को घुटने टेकने पर विवश करने और इस्राएल के एक बड़े छुटकारे के दिन का वर्णन है। वह भी 'सत्य और विश्वासयोग्य' है। मिस्र पर बहुत सी महामारियाँ भेजी गई, उनके पहिलौठे की मृत्यु भी हुई। जब इस्राएल लाल समुद्र के सामने फंस गया, तब 'लाल समुद्र के दो भाग' होने का वर्णन है, परमेश्वर ने जल के दो भाग किये जबकि आग की एक दीवार ने मिस्री सेना को आगे बढ़ने नहीं दिया, परन्तु परमेश्वर के लोगों ने सूखी भूमि पर चलकर समुद्र पार किया, पर जब मिस्रियों ने जाना चाहा, वे लाल समुद्र के बीच पहुँचे और जल के दोनो भाग फिर से एक हो गये। सभी मिस्री, फिरौन समेत लाल समुद्र में जलमग्न होकर मृत हो गये। हाँ, वे वचन भी 'सत्य और विश्वासयोग्य है'। तब 40 वर्ष जंगल में भटकने का समय आया, परमेश्वर ने उन सभी महान आश्चर्यकर्मों के साथ जो उसने किये थे, उन सबको संभाला – चमत्कारिक रोटी स्वर्ग से उतरी जिसे मन्ना कहा गया, उसने उन्हें चट्‌टान में से पानी पिलाया, उसने सुनिश्चित किया कि उनके जूते उस पूरे कालखण्ड में न पुराने हुये न घिसे। उसने मूसा को दस आज्ञाएं भी दी। ये सभी वृतान्त जो हम पवित्र–पुस्तक बाईबल में पढ़ते है, सत्य एवं विश्वासयोग्य है। तब इस्राएलियों की कुड़कुड़ाहट और उन पर परमेश्वर का दण्ड आया, जैसे कि पृथ्वी का मुँह खोलना और कुछ बलवा करने वालों को निगल जाना, और अन्य विपत्तियाँ जो उन पर आई। तब परमेश्वर ने मूसा से पीतल का सांप बनाने के लिये कहा, और जब इस्राएलियों ने पीतल के सर्प को देखा वे चंगे हो गये, उसके बाद उनका यरदन पार करना जबकि यरदन का जल ठहर गया और इस्राएली चलकर उस पार कनान देश में गये। कनान में प्रवेश के बाद इस्राएलियों की जीत के लिये परमेश्वर ने कैसे–कैसे बड़े काम किये, जब इस्राएलियों ने वाचा का संदूक लेकर यरीहो नगर के 13 चक्कर काटे, परमेश्वर ने उसकी शहरपनाह को गिरा दिया। वे प्रतिदिन यरीहो का एक चक्कर लगाते थे और सांतवे दिन उन्होंने सात चक्कर लगाये, और सातवें दिन शहरपनाह धराशायी हो गई, वे सभी वचन जो लिखे गये, वे भी 'सत्य और विश्वासयोग्य' थे।

जब हम बाईबल में पढ़ते जाते हैं, परमेश्वर की संतान मंत्रमुग्ध हो जाती है। हम परमेश्वर के अदृभुत और अकल्पनीय वचन से अपनी आँखें हटा नहीं पाते, जब परमेश्वर हमें बताते है कि उन्होंने क्या–क्या किया है, और वे सब 'सत्य और विश्वासयोग्य' है। वे एक सर्वशक्तिमान और अद्भुत भययोग्य परमेश्वर को प्रगट करती है जो अपने लोगों के लिये वास्तव में महान् काम कर सकता है। हम परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं के बारे में और उनमें से कुछ के अतीत में पूरी होने और शेष भविष्य में पूरी होने के बारे में पढ़ते है। हम बस इस पवित्र पुस्तक बाईबल में पढ़ते जाते है, क्या यह बहुत अधिक नहीं लगता, नहीं, यह अतिश्योक्ति नहीं, निश्चित तौर पर बहुत सी बातें है जिन्हें कहना और मन में रखना चाहिये, फिर भी परमेश्वर उन सबको प्रमाणित करते है, इस बात से कोई फर्क नहीं पड़ता कि संसार बाईबल की बातों को किस दृष्टि से देखता है, जैसे कि दाऊद का गोफन और पत्थर लेकर शक्तिशाली विशालकाय गोलियत के विरूद्ध युद्ध करना। एक भीमकाय मानव जो अस्त्र–शस्त्रों से लैस होकर दाऊद को मारने आता है और वह निश्चय उसे मार सकता था। परन्तु दाऊद ने परमेश्वर पर भरोसा रखा और गोफन चला कर पत्थर को गोलियत के माथे पर मारा और गोलियत गिरकर मर गया। तब दाऊद ने गोलियत की तलवार निकाली और उसी से उसका सिर कलम कर दिया। परमेश्वर अपने लोगों के बारे में कितनी आश्चर्यजनक और सत्य घटनाएँ हमें बताते है।

यरूशलेम पर आक्रमण करने वालों के वृतान्त भी है, जैसे कि राजा हिजिकिय्याह के समय में अश्शूरियों ने धावा किया। वे इतने निकट आ चुके थे कि यरूशलेम की शहरपनाह पर खड़े लोगों ने उन देशों की चर्चाएं सुनी, जिन्हें अश्शूर के राजा ने जीत लिया था। परमेश्वर के पास हिजिकिय्याह और यशायाह थे जिन्होंने परमेश्वर के सामने याचनाएं की, क्योंकि अश्शूरी लोग इस्राएल के परमेश्वर के विरूद्ध बुरी बातें बोल रहे थे। परमेश्वर ने क्या किया ? सुबह अश्शूरी सेना के सभी 1,85,000 सैनिकों के शव पड़े मिले। वे रात में परमेश्वर के हाथों मारे गये। हम इन वृतान्तों को पढ़ते हैं, और परमेश्वर की प्रशंसा करते हैं क्योंकि जानते है कि ये सब परमेश्वर ही ने किया था। हम जानते है कि परमेश्वर ने गिदोन, यिप्तह, शिमशोन और दाऊद जैसे लोगों का उपयोग किया। हम जानते हैं कि परमेश्वर ने एलिय्याह और एलीशा के द्वारा आश्चर्यकर्म किये। हम जानते हैं कि परमेश्वर ही ने सब काम किये। हम इन बातों को आत्मसात करते और जानते है कि हमारा परमेश्वर महान् और सामर्थी है, और जो कुछ उसने कहा है, उन सब बातों में ''सच्चा और विश्वासयोग्य'' है।

हम कभी–कभी बाईबल में दिये ऐतिहासिक वृतान्तों को पढ़कर और उसके भविष्यद्वक्ताओं द्वारा परमेश्वर की आत्मा की प्रेरणा पाकर लिखे गये परमेश्वर के धन्य कामों को पढ़कर बहुत रोमांचित हो उठते है। वे सब घटनायें इतिहास में हुई और यह परमेश्वर की उसके

लोगों के प्रति विश्वासयोग्यता, उसकी एकनिष्ठा और सच्चाई और उसके द्वारा उसकी प्रजा से कभी भी की गयी प्रतिज्ञाओं को ''उनकी मात्रा और बिन्दु'' समेत पूरा करने की उसकी प्रतिबद्धता का प्रमाणित अभिलेख है।

परन्तु हम यह भी जानते है कि बाईबल का लेखन प्रथम शताब्दी में, आज से लगभग दो हजार वर्ष पहले पूरा हो चुका था। एक बार जब बाईबल पूरी लिखी गई, परमेश्वर ने उसके भविष्यद्वक्ताओं के साथ बातचीत बन्द कर दी, और अब वे आगे उस अलौकिकता के नाके को नहीं तोड़ेंगे, जैसा की उन्होंने एक बार प्रेरितों के काम की पुस्तक में किया। उन्होंने पतरस और पौलुस के द्वारा आश्चर्यकर्म किये ताकि प्रमाणित करे कि वे परमेश्वर के सच्चे भविष्यद्वक्ता थे, और नये नियम की कलीसियाओं की स्थापना करने वाले स्वयं परमेश्वर ही थे। किन्तु परमेश्वर ने यह सब बन्द कर दिया। नये नियम के युग में वे समुद्र के दो भाग नहीं करते, अब वे शहरपनाह को नहीं गिराते और न सेना का संहार करते है। अब वे किसी अल्पव्यस्क के द्वारा किसी दानव का वध या अन्य दूसरे काम जो उन्होंने अपनी प्रजा से कराये थे, नहीं कराते। परमेश्वर के लोगों के द्वारा सम्पन्न आश्चर्यकर्म कार्य बाईबल के लेखन के दिनों में परमेश्वर ने किये, और बाईबल का लेखन पूरा होने के बाद फिर कभी नहीं किये जायेंगे। तब लगभग 2000 वर्षों तक हम केवल बाईबल में देख सकते थे क्योंकि हमें बाईबल से बाहर परमेश्वर के लोगों के द्वारा किए कोई आश्चर्यकर्म देखने नहीं मिले। केवल एक ही आश्चर्यजनक काम परमेश्वर नये–नियम के युग में करते आये है, वह है पापियों को उद्धार देना, उनके भीतर नये हृदयों की सृष्टि करना, परन्तु कोई इसे देख नहीं सकता क्योंकि वह (अदृश्य) आत्मा के भीतर किया जाता है।

इस प्रकार, यद्यपि परमेश्वर पिछली शताब्दियों में सक्रियता से लोगों को उद्धार देते आये है, बाहरी तौर पर कोई नाटकीय घटना नहीं घटती जिससे संसार के लोगों को पता चले कि परमेश्वर काम कर रहे थे। समय गुजरने के साथ–साथ संसार के लोग जो विश्वास करने के लिये (पहले) "देखना, सुनना या अनुभव करना" चाहते थे, बाईबल के परमेश्वर से दूर जाने लगे, और आज हमारे समय में अब लोग इस पर विचार भी नहीं करना चाहते। वे विश्वास करते हैं कि यह एक प्राचीन पुस्तक है जो प्राचीन बातों की चर्चा करती है और 'आधुनिक जीवन' के संदर्भ में इसकी वास्तव में कोई प्रासंगिकता नहीं है, न यह आधुनिक जीवन में प्रभाव डालने योग्य है। इस कारण, संसार आगे बढ़ रहा है और सोचता है कि बाईबल और बाईबल का परमेश्वर विचारणीय और आवश्यक नहीं है, परन्तु फिर भी परमेश्वर कहते है, ''ये वचन सत्य और विश्वास के योग्य'' है। परमेश्वर का वचन कुछ बातों के भविष्य में पूरा होने के विषय में कहता है जो बाईबल के लेखनकाल में पूरी नहीं हुई है – यह सब बातों का अन्त है, और फिर कलीसियाओं का न्याय और संसार का न्याय हुआ। इस पृथ्वी का विनाश होगा और एक नये आकाश और एक नयी पृथ्वी का सृजन होगा। परमेश्वर ने इन बातों को कहा है, साथ ही अन्य बातें भी उसने बाईबल में

कही है, और वे सब वचन ''सत्य और विश्वासयोग्य है'' और जो परमेश्वर कह चुके है, उसे पूरा भी करेंगे।